HP/48/SML (upto 31-12-2020) Pre Paid RNI No. HPHIN/2001/04280

पढ़ें देवभूमि के सब परिवार, जगे देशभक्ति मिले संस्कार www.matrivandana.org

# मातृवन्दना

पौष-माघ, युगाब्द 5121, जनवरी 2020

## देश हित में
## नागरिकता संशोधन कानून

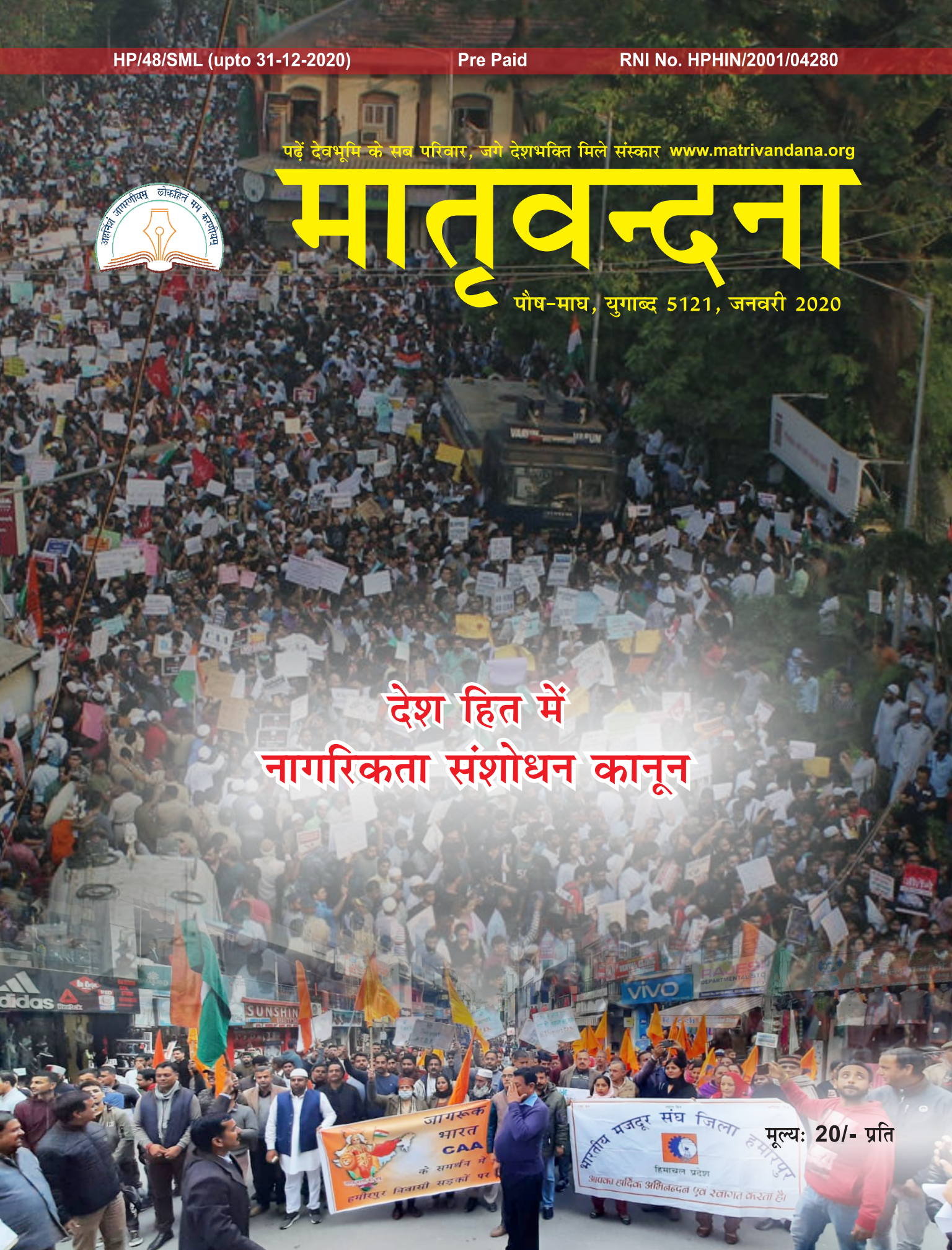


मूल्य: 20/- प्रति

# मातृवन्दना

*सदस्यता अभियान 2020-21*

*1-15 फरवरी 2020*

बहुमूल्य सामग्री एवं सुन्दर कलेवर के साथ पाठकों की सेवा में समर्पित

| | |
|---|---|
| हिमाचल की सर्वाधिक प्रसार वाली पत्रिका | सर्वाधिक स्थानों तक पहुंच |
| 35 हज़ार परिवारों तक पहुंच | दो लाख से अधिक पाठक |
| नववर्ष का आकर्षक कैलेण्डर नि:शुल्क | समाचार ही नहीं संस्कार भी |

पढ़ें देवभूमि के सब परिवार, जगे देशभक्ति मिले संस्कार

*अधिक जानकारी के लिए सम्पर्क करें :*

प्रबन्धक, मातृवन्दना

डॉ. हेडगेवार भवन, नाभा हाऊस, शिमला - 171 004,

दूरभाष : 0177-2836990 **7650000990**

*email: matrivandanashimla@gmail.com*

*website: www.matrivandana.org*

**वार्षिक शुल्क**

**100 रुपए**

आजीवन सदस्य ( 15 वर्ष )

1000/- रुपए

नियमित पाठकों से निवेदन है कि अपनी सदस्यता का नवीनीकरण उपर्युक्त समय पर अवश्य करवाएं।

आप भी इसके सदस्य व वितरक बनकर समाज में स्वच्छ व राष्ट्रीय विचारों के प्रचार में सहभागी बनें।

## सूचना

*वर्ष 2020-21 में मातृवन्दना पत्रिका प्रकाशन के 26 वर्ष पूरे होने पर 2020 का वर्ष प्रतिपदा प्रकाशित करने की योजना बनी है। अत: लेखकों एवं कवियों से निवेदन है कि अपने लेख व कविताएं 28 फरवरी 2020 तक मातृवन्दना सम्पादकीय कार्यालय में हस्तलिखित या टाईप करवाकर डाक या मेल द्वारा निर्धारित तिथि तक अवश्य भेज दें।*

*अधिक जानकारी के लिए सम्पर्क करें :*

**सम्पादक, मातृवन्दना**

डॉ. हेडगेवार भवन, नाभा हाऊस, शिमला - 171 004,

*दूरभाष: 0177-2836990 मो. 9805036545*

*email: matrivandanashimla@gmail.com | website: www.matrivandana.org*

*मातृवन्दना पत्रिका में विज्ञापन प्रकाशित करने हेतु सम्पर्क करें:*

विज्ञापन प्रबंधक: मो.न. 83510-92947

दूरभाष: 0177-2836990

डॉ. हेडगेवार भवन, नाभा हाऊस, शिमला - 171 004,

*email: matrivandanashimla@gmail.com | website: www.matrivandana.org*

वर्ष: 20 अंक : 1 | पौष-माघ कलियुगाब्द 5121, जनवरी, 2020

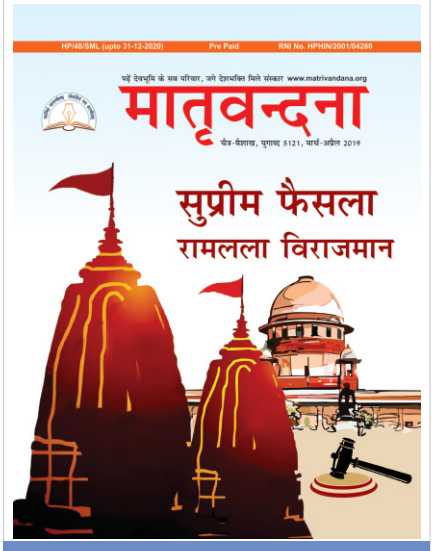

| | | |
|---|---|---|
| **संपादकीय** | देश हित में है नागरिकता संशोधन | 5 |
| **चिंतन** | किसी के बारे में धारणा बनाने से | 6 |
| **प्रेरक प्रसंग** | सकारात्मक रहने से सुखी | 7 |
| **आवरण** | क्यों चाहिए नागरिकता संशोधन | 8 |
| **देश-प्रदेश** | जिहादी संगठन इस्लामिक स्टेट | 12 |
| **देवभूमि** | हिमाचल का पहला अंतरराष्ट्रीय स्तर | 14 |
| **विश्वदर्शन** | अमेरिका में अधिक बोलने वाली | 16 |
| **दृष्टि** | नशे की बुराई को छोड़ संस्कार | 17 |
| **घूमती कलम** | जल संग्रहण और उसकी उपयोगिता | 18 |
| **स्वास्थ्य** | देशी गाय का घी जब तक जीएं घी खाएं | 20 |
| **कृषि जगत** | प्रकृति एवं गाय के संरक्षण | 21 |
| **काव्य जगत** | मेरी बहन | 23 |
| **प्रतिक्रिया** | सरस्वती की पूजा का दिन है | 24 |
| **समसामयिकी** | इस्लामोफोबिया की वैश्विक चुनौती | 25 |
| **पुण्य स्मरण** | इंदौरा के कर्मठ समाजसेवी | 26 |
| **विविध** | दंगाई नाबालिग दोषी कौन | 28 |
| **महिला जगत** | 100 मील मैराथन अचीवर हैं | 30 |
| **बाल जगत** | सफलता के लिए लगातार सीखें | 33 |


**सम्पादक**

डॉ. दयानन्द शर्मा

**सह-सम्पादक**

वासुदेव शर्मा

**सम्पादक मण्डल**

मीनाक्षी सूद
डॉ. अर्चना गुलेरिया
डॉ. उमेश मोदगिल
डॉ. जय कर्ण

**पत्रिका प्रमुख**

शांति स्वरुप

**वितरण प्रमुख**

जय सिंह ठाकुर

**कार्यालय:**

मातृवन्दना, डॉ. हेडगेवार भवन, नाभा हाउस, शिमला-4, दूरभाष: 0177-2836990

**E-mail: matrivandanashimla@gmail.com, Web.: www.matrivandana.org**

**प्रकाशक एवं मुद्रक:** कमल सिंह सेन द्वारा मातृवन्दना संस्थान के लिए सवितार प्रैस, प्लॉट नं. 820, फेस-2, उद्योग क्षेत्र, चण्डीगढ से मुद्रित तथा डॉ. हेडगेवार भवन, नाभा हाउस, शिमला-171004 से प्रकाशित। **सम्पादक: डॉ. दयानंद शर्मा।**

| | |
|---|---|
| मासिक शुल्क | ₹20 |
| वार्षिक शुल्क | ₹100 |
| आजीवन शुल्क | ₹1000 |

**वैधानिक सूचना:** पत्रिका का सम्पादकीय कार्य पूर्णत: अवैतनिक है। पत्रिका में छपी सामग्री से सम्पादक का सहमत होना जरुरी नहीं। इस सम्बन्ध में किसी भी कार्यवाही का निपटारा शिमला न्यायालय में ही होगा।

# पाठकीय...

**संपादक महोदय**

भारत की संसद में नागरिकता संशोधन विधेयक पास हो गया है। जिस दिन यह विधेयक पास हुआ उस दिन को जहां देश के आदरणीय प्रधानमंत्री ने ऐतिहासिक दिन बताया है वहीं कांग्रेस अध्यक्षा ने उसे काला दिन कहा है। सोनिया गांधी कि मूल रूप से इटालियन महिला हैं और गांधी परिवार की बहू हैं। हालांकि ऊपर से देश की संस्कृति से जुडी हुई दिखती हैं, परन्तु मन से वह देश के लोगों की भावनाओं को नही समझ पा रही हैं। यह विधेयक देश में रह रहे पड़ोसी देशों के अल्पसंख्यकों को लेकर है, जिनकी पाकिस्तान, बांग्लादेश, अफगानिस्तान जैसे देशों में प्रताड़ना हो रही है। वह लोग भारत में शरण लिए हुए हैं। इनमें हिन्दू, सिख, जैन और ईसाई शामिल हैं। उनकी प्रताड़ना का अनुमान आप इस बात से लगा सकते हो कि 1947 मे पाकिस्तान में अल्पसंख्यक 23 प्रतिशत थे जो अब केवल 3.7 रह गए हैं। बंग्लादेश जहां यह आबादी 22 प्रतिशत थी वहां घट कर यह 1.8 प्रतिशत रह गई है। उन्हें या तो मार दिया गया है या फिर उन्हें जबर्दस्ती धर्म परिवर्तन के लिए मजबूर होना पड़ा है। यदि ऐसे शरणार्थियों को नागरिकता दी जाती है तो यह मानवीय मूल्यों का आदर होगा। सोनिया का एतराज है कि इसमे मुस्लिम भाईयों को क्यों बाहर रखा गया। वह इस बात को समझें इन देशों में मुस्लिम न अल्पसंख्यक हैं और न ही प्रताड़ित हैं। सोनिया को घुसपैठियों और शरणार्थियों में जो अन्तर है उसे भी समझना होगा। इसके अतिरिक्त भारत के लोगों की भावनाओं को समझना होगा और उनका आदर भी करना होगा। कपिल सिब्बल जैसे उनके सिपहसालार इस विधेयक को कोर्ट में चुनौती दे रहे हैं। कानून की अदालत में क्या होगा मुझे मालूम नहीं, पर वह जनता की अदालत में इस विषय पर जरूर पराजित होंगे। **शांति गौतम, पत्रकार बीबीएन** ◆◆◆

**महोदय**

पाकिस्तान, अफगानिस्तान और बांग्लादेश घोषित इस्लामी राष्ट्र हैं। इन देशों में स्थापना काल से ही अल्पसंख्यक जिसमें प्रमुख रूप से हिंदू और सिख हैं, प्रताड़ना के शिकार होते रहे हैं। आज इन देशों में अल्पसंख्यक जनसंख्या न्यूनतम स्तर पर है। उत्पीड़न से बचने के लिए भारत में शरण ले चुके इन लोगों को नागरिकता का अधिकार देने पर आपत्ति समझ से परे है। नागरिकता संशोधन कानून नागरिकता देने का कानून है, छिनने का नहीं। समय-समय पर ऐसे कानून लाकर लोगों को नागरिकता दी जाती रही है। स्वार्थ पूर्ण सियासत के लिए धर्मनिरपेक्षता और संविधान की रक्षा के नाम पर समाज में साम्प्रदायिक सोच को हवा देने का घृणित कार्य हो रहा है। झूठ और भ्रम की स्थिति निर्माण की जा रही है। विपक्षी दलों में मुस्लिम तुष्टिकरण की प्रतिस्पर्धा के कारण ही आज देश को दंगों की आग में जल रहा है। तुष्टिकरण की नीति ने हमेशा देश का अहित ही किया है। देश का दुर्भाग्य ही है, राजनेता आज भी इस नीति के बल पर सत्ता के करीब बना रहना चाहते हैं और जनता इनके बहकावे में आ जाती है। संविधान और लोकतन्त्र की रक्षा के नाम पर सरकारी व सार्वजनिक सम्पत्ति का नुकसान तथा पुलिस पर हमले देश को कमजोर करने की साजिश है। हमें किसी की स्वार्थ पूर्ति का साधन न बनकर, उनके कुटिल इरादों को हतोत्साहित कर, एक जागरूक नागरिक होने का परिचय देना चाहिए। ◆◆◆ **जोगिन्द्र ठाकुर, गाँव व डाकघर भल्यानी, कुल्लू**

## जनवरी माह के शुभ मुहूर्त की तिथियां

| तारीख | दिन | तिथि | तिथि | नक्षत्र |
|---|---|---|---|---|
| 15 जनवरी | बुध | माघ कृ. पंचमी | माघ कृ. पंचमी | उ.फाल्गुन |
| 16 जनवरी | गुरु | माघ कृ. षष्ठी | माघ कृ. षष्ठी | हस्त चित्र |
| 17 जनवरी | शुक्र | माघ कृ. सप्तमी | माघ कृ. सप्तमी | चित्र स्वाति |
| 18 जनवरी | शनि | माघ कृ. नवमी | माघ कृ. नवमी | स्वाति |
| 19 जनवरी | रवि | माघ कृ. दशमी | माघ कृ. दशमी | अनुराधा |
| 20 जनवरी | सोम | माघ कृ. एकादशी | माघ कृ. एकादशी | अनुराधा |
| 26 जनवरी | रवि | माघ शु. द्वितीया | माघ शु. द्वितीया | घनिष्ठा |
| 29 जनवरी | बुध | माघ शु. चतुर्थी | माघ शु. चतुर्थी | उ.भाद्रपद |
| 30 जनवरी | गुरु | माघ शु. पंचमी | माघ शु. पंचमी | उ.भाद्रपद रेवती |
| 31 जनवरी | शुक्र | माघ शु. षष्ठी | माघ शु. षष्ठी | रेवती अश्विनी |

**शिकायत व सुझाव** के लिए सम्पर्क करें अथवा लिखें
**0177-2836990** **7650000990**
ई-मेल: matrivandanashimla@gmail.com
सभी सुधी पाठकों व विज्ञापनदाताओं को स्वामी विवेकानंद व नेताजी जयंती, हिमाचल पूर्ण राज्यत्व व गणतंत्र दिवस, बसंत पंचमी व गुरू रविदास जयंती की हार्दिक शुभकामनाएं।

## स्मरणीय दिवस ( जनवरी )

| | |
|---|---|
| लोहड़ी | 13 जनवरी |
| मकर संक्रांति/गुढी | 14 जनवरी |
| रामानंदाचार्य जयंती | 17 जनवरी |
| षट्तिला एकादशी | 20 जनवरी |
| नेताजी जयंती | 23 जनवरी |
| पूर्ण राज्यत्व दिवस | 25 जनवरी |
| गणतंत्र दिवस | 26 जनवरी |
| बसंत पंचमी | 29 जनवरी |
| अजा एकादशी | 05 फरवरी |
| श्री गुरू रविदास जयंती | 09 फरवरी |

# देश हित में है
# नागरिकता संशोधन विधेयक

भारत 'वसुधैव कुटुम्बकम्' की वैचारिक पृष्ठभूमि पर वैश्विक सहिष्णुता को अभिमान देता आया है। उसने शक, हूण, कुषाण, तुर्क, मुगल जो आक्रमणकारी थे, पश्चात् शासक भी बने उन्हें भी भारत ने अपनाया और यहीं के बन गये। स्वतन्त्र होने पर भी भारत ने चीनी कुचक्र के शिकार तिब्बत में शरणार्थियों को शरण दी। बांग्लादेश से अवैध रूप से आये उत्पीड़न हिन्दू मुसलमान का भी बोझ उठाया। वर्तमान में केन्द्रीय सत्ता ने पुन: वैश्विक सहिष्णुता का परिचय देते हुए संसद के दोनों सदनों में नागरिकता संशोधन विधेयक पारित कर दिया है। इसको लागू किये जाने पर पाकिस्तान, बांग्लादेश तथा अफगानिस्तान से आये उन अल्पसंख्यक शरणार्थियों को भारतीय नागरिक बनने का सुअवसर प्राप्त हो जाएगा जो उक्त देशों से प्रताड़ित होकर यहां बस गये हैं। यह विधेयक किसी धर्म विशेष के खिलाफ एवं भेदभाव वाला नहीं पीड़ित अल्पसंख्यकों के लिए है, जो घुसपैठियों नहीं अपितु शरणार्थी हैं। अभी तक कानून में भारतीय नागरिकता प्राप्त करने के लिए ग्यारह वर्ष की समयावधि तक भारत में रहना आवश्यक था किन्तु अब यह समय सीमा घटाकर छह वर्ष कर दी गई है।

इस विधेयक के प्रति जो शंकाएं उत्पन्न हुई हैं अथवा जिन बातों का भ्रम फैलाया जा रहा है, उनसे पूर्वोत्तर के राज्यों में इसके विरोध में आन्दोलन की आग भड़क उठी है। विपक्ष एवं वामपंथियों की गहरी साजिश के तहत यह आग दिल्ली, उत्तर प्रदेश पश्चिम बंगाल तथा अन्य मुस्लिम बहुल क्षेत्रों में भयानक रूप से फैल चुकी है। विपक्षी दलों द्वारा मुसलमानों तथा उच्च शिक्षा संस्थानों में युवा छात्र-छात्राओं को उकसाया जा रहा है। इस विधेयक के विरोध में जिस प्रकार हिंसा और तोड़-फोड़ शुरू हुई है, वह तो राजनैतिक लाभ लेने की पराकाष्ठा है और इससे असामाजिक तत्वों का मनोबल बढ़ गया है। आम जनता विशेषकर मुसलमानों को यह समझना होगा कि इस विधेयक से उनका कोई अनहित होने वाला नहीं, किसी भी भारतीय मुसलमान को परेशानी नहीं होगी। किसी भी भारतीय की नागरिकता की मांग नहीं की जायेगी। यह मुसलमान भी समझते हैं कि पाकिस्तान, बांग्लादेश और अफगानिस्तान से किस प्रकार घुसपैठ कर आतंकवादी यहां आकर भयावह आतंकवादी घटनाओं को अंजाम देते हैं और दहशत फैलाते हैं। धर्म के आधार पर पाकिस्तान की नींव रखी गई थी। वहां सत्ता मुसलमानों के हाथ है। वहां पीड़ित हैं तो हिन्दू तथा अन्य अल्पसंख्यक उनकी दूर्दशा पूरा विश्व जानता है। इन हालात में उनको शरण देना तथा नागरिकता प्रदान करना एक सभ्य देश का कर्तव्य बन जाता है। भारतीय मुसलमानों के आक्रोश का कारण जायज नहीं। हिन्दु, सिख, ईसाई, पारसी, बौद्ध, जैन अल्पसंख्यकों के साथ वहां के मुसलमान इस विधेयक में इसलिए नहीं जोड़े गये क्योंकि वे उन देशों में बहुसंख्यक हैं और सत्ता में हैं। भारतीय मुस्लमानों के प्रति यहां कोई पक्षपात नहीं। सत्ता में उनकी पूर्ण भागीदारी है। राष्ट्रपति बने हैं, मंत्री बने हैं, प्रधान न्यायाधीश भी और योग्यतानुसार उच्च पदों पर आसीन होकर अपने देश की सेवा में तत्पर हैं। 1951 की जनगणना में भारत में मुसलमानों की जनसंख्या 3.54 करोड़ थी जो आज दो गुना से ज्यादा हो गई है। जबकि पाकिस्तान में हिंदू नाममात्र ही रह गये हैं। पाकिस्तान में ग्यारह प्रतिशत के स्थान पर केवल 1.6 प्रतिशत हिन्दू शेष बचे हैं और बांग्लादेश में 30 प्रतिशत की जगह केवल 8.6 प्रतिशत हिन्दू शेष है। उनकी बहु बेटियां वहां सुरक्षित नहीं। अपने रस्मो रिवाज उन्हें निभाने नहीं दिए जाते, कई प्रकार की बंदिशें हैं। अल्पसंख्यकों को मतान्तरित होने के लिए विवश किया जा रहा है। असम समेत पूर्वोतर की एक बड़ी आवादी जो एन.आर.सी के कारण पहले से ही नाराज एवं सशंकित हैं, अब इस विधेयक को अपने राज्यों की सांस्कृतिक, भाषायी एवं पारम्परिक विरासत के लिए घातक मान रही है। जबकि सरकार का कहना है कि उनके हितों की रक्षा की जायेगी। नागरिकता केवल उन्हें मिलेगी जो 31 दिसम्बर 2014 से पूर्व यहां आकर रह रहे हैं। यह विधेयक किसी विशेष राज्य पर केन्द्रित नहीं अपितु भारत के सभी राज्यों के लिए लाभ होगा।

# किसी के बारे में धारणा बनाने से पहले सच्चाई जानें

एक बार ट्रेन से पिता-पुत्र यात्रा कर रहे थे, पुत्र की उम्र करीब 24 साल की थी, पुत्र ने खिड़की के पास बैठने की जिद की, क्योंकि पिता खिड़की की सीट पर बैठे थे। पिता ने खुश-खुशी खिड़की की सीट पुत्र को दे दी और खुद बगल में बैठ गये। ट्रेन में आस-पास और भी यात्री बैठे थे, ट्रेन चली तो पुत्र बड़ी उत्सुकता से चिल्लाने लगा 'देखो पिता जी नदी, पुल, पेड़ पीछे जा रहे है, बादल भी पीछे छूट रहे हैं। पिता भी उसकी हाँ में हाँ मिला रहे थे। उसकी ऐसी हरकतों को देखकर वहां बैठे यात्रियों को लगा कि शायद इस लड़के को कोई दिमागी समस्या है, जिसके कारण यह ऐसी हरकत कर रहा है।

पुत्र बहुत देर तक ऐसी अजीबो-गरीब हरकत करता रहा। तभी पास बैठे एक यात्री ने पिता से पूछा कि-'आप अपने पुत्र को किसी अच्छे डॉक्टर को क्यों नही दिखाते? क्योंकि उसकी हरकत सामान्य नहीं है, हो सकता है की कोई दिमागी बीमारी हो।' उस यात्री की बात सुनकर पिता ने कहा- 'हम अभी डॉक्टर के पास से ही आ रहे हैं। पिता की बात सुनकर यात्री को आश्चर्य हुआ।'

पिता ने बताया कि-'मेरा पुत्र जन्म से ही अंधा था। कुछ दिन पहले ही इसको आँखों की रोशनी प्राप्त हुई है, इसे किसी दूसरे की आँखें लगाई गई हैं, और जीवन में पहली बार यह दुनिया को देख रहा है। यह इसलिए ऐसी हरकत कर रहा है, क्योंकि ये सारी चीजें इसके लिए एकदम नई हैं। ठीक वैसे ही जैसे किसी छोटे बच्चे के लिए होती हैं।' पिता की बात सुनकर आस-पास बैठे लोगों को अपनी गलती का अहसास हुआ और उन्होंने पुत्र के पिता से माफी भी मांगी।

जीवन में कई बार हम बिना सच्चाई जाने ही कुछ लोगों के प्रति अपनी एक राय बना लेते हैं। क्योंकि हम उसके बारे में वही सोचते हैं, जो हमें दिखाई देता है। इसलिए किसी के बारे में राय बनाने से पहले हमे उसकी सच्चाई जान लेनी चाहिए। जिससे बाद में सच्चाई का पता लगने पर शर्मिंदा ना होना पड़े। ◆◆◆

## एक अंतिम प्रयास

किसी गांव में एक व्यापारी रहता था तथा उसकी भगवान में बड़ी आस्था थी। एक बार व्यापारी किसी दूसरे शहर से अपने घर लौट रहा था। बस से उतरकर वह पैदल अपने घर के रास्ते पर जा रहा था, तभी रास्ते में उसे एक बड़ा सा चमकीला पत्थर दिखा। उस पत्थर की ओर व्यापारी आकर्षित हो गया और उसने सोचा कि क्यों न इसे अपने साथ ले जाऊं? इस खूबसूरत पत्थर से अपने घर के लिए शानदार भगवान की मूर्ति बनवाऊंगा। व्यापारी ने पत्थर उठा लिया और रास्ते में ही एक प्रसिद्ध मूर्तिकार की दुकान पर रुका और उसे कहा, 'इस पत्थर की एक खूबसूरत-सी देवी मां की प्रतिमा बना दीजिए।' मूर्तिकार ने कहा- ठीक है बन जाएगी, आप कुछ दिन बाद आकर ले जाइएगा। अब मूर्तिकार ने उस पत्थर को तराशने का काम शुरू किया और अपने औजार लेकर पत्थर को काटने में जुट गया। जैसे ही मूर्तिकार ने पहला वार किया लेकिन पत्थर टस से मस भी नहीं हुआ। अब तो उसको पसीना छूट गया। वो लगातार हथौड़े से प्रहार करता रहा लेकिन पत्थर नहीं टूटा। उसने लगातार कई दिनों तक प्रयास किए और अपनी तरफ से 99 प्रतिशत मेहनत की लेकिन पत्थर तोड़ने में नाकाम रहा। कुछ दिन बाद जब व्यापारी मूर्तिकार से अपनी मूर्ति लेने आया, तब मूर्तिकार ने उसे सारी बात बताते हुए कहा कि इस पत्थर से तो आपकी मूर्ति नहीं बन पाएगी। व्यापारी यह सुनकर दु:खी हो गया और वह वहां से चला गया। आगे जाकर उसने किसी दूसरी दुकान के मूर्तिकार को वही पत्थर मूर्ति बनाने के लिए दे दिया। अब इस मूर्तिकार ने अपने औजार उठाए और पत्थर काटने में जुट गया। जैसे ही उसने पहला हथौड़ा मारा पत्थर टूट गया, चूंकि पत्थर पहले मूर्तिकार की चोटों से काफी कमजोर हो गया था। व्यापारी यह देखकर बहुत खुश हुआ और देखते ही देखते मूर्तिकार ने देवी मां की सुंदर प्रतिमा बना दी। व्यापारी मन ही मन पहले मूर्तिकार की दशा सोचकर मुस्कुराया कि उस मूर्तिकार ने 99: मेहनत की लेकिन आखिर में थक गया। काश! उसने एक आखिरी प्रहार और भी किया होता तो वो सफल हो जाता। ◆◆◆

# सकारात्मक सोच की शक्ति

## सकारात्मक रहने से सुखी रह सकते हैं

एक लोक कथा के अनुसार किसी गांव के बाहर दो संत एक झोपड़ी में रहते थे। दोनों रोज सुबह अलग-अलग गांवों पर जाते और भिक्षा मांगते। शाम को झोपड़ी में लौट आते थे। दिनभर भगवान का नाम जपते। इसी तरह इनका जीवन चल रहा था। एक दिन वे दोनों अलग-अलग गांवों में भिक्षा मांगने गए निकल गए। शाम को अपने गांव लौटकर आए तो उन्हें मालूम हुआ कि गांव में आंधी-तूफान आया था।

जब पहला संत अपनी झोपड़ी के पास पहुंचा तो उसने देखा कि तूफान की वजह से झोपड़ी आधी टूट गई है। वह क्रोधित हो गया और भगवान को कोसने लगा। संत ने सोचा कि मैं रोज भगवान के नाम का जाप करता हूं, मंदिर में पूजा करता हूं, दूसरे गांवों में तो चोर-लूटेरे लोगों के घर तो सही-सलामत हैं, हमारी झोपड़ी तोड़ दी। हम दिनभर पूजा-पाठ करते हैं, लेकिन भगवान को हमारी चिंता नहीं है।

कुछ देर बाद दूसरा संत झोपड़ी तक पहुंचा तो उसने देखा कि आंधी-तूफान की वजह से झोपड़ी आधी टूट गई है। ये देखकर वह खुश हो गया। भगवान को धन्यवाद देने लगा। साधु बोल रहा था कि हे! भगवान आज मुझे विश्वास हो गया कि तू हमसे सच्चा प्रेम करता है। हमारी भक्ति और पूजा-पाठ व्यर्थ नहीं गई। इतने भयंकर आंधी-तूफान में भी हमारी आधी झोपड़ी तूने बचा ली। अब हम इस झोपड़ी में आराम कर सकते हैं। आज से मेरा विश्वास और ज्यादा बढ़ गया है।

इस छोटे से प्रसंग की सीख यह है कि हमें सकारात्मक सोच के साथ हालात को देखना चाहिए। इस प्रसंग में पहला संत दुखी रहता है, क्योंकि उसकी सोच नकारात्मक है। जबकि दूसरा संत सुखी है, क्योंकि वह भगवान पर भरोसा करता है और उसकी सोच सकारात्मक है। बुरे समय में नकारात्मक बातों से बचेंगे तो हमेशा सुखी रहेंगे। ◆◆◆

# आइसक्रीम की एक डिश

एक बार एक छोटा सा लड़का एक होटल में गया। कुछ ही देर में वहां वेटर आया और पूछा आपको क्या चाहिए सर? छोटे बच्चे ने उल्टा पुछा! वैनिला आइसक्रीम कितने रूपए का है? उस वेटर वाले ने जवाब दिया 50 रुपये का।

यह सुन कर उस छोटे लड़के ने अपने जेब में हाथ डाल कर कुछ निकाला और हिसाब किया। उसने दोबारा पूछा कि संतरा फ्लेवर आइसक्रीम कितने का है। वेटर ने दुबारा जवाब दिया और कहा 35 रुपये का सर।

यह सुनने के बाद उस लड़के ने कहा! मेरे लिए एक संतर फ्लेवर आइसक्रीम ले आईये।' कुछ ही देर में वेटर आइसक्रीम की प्लेट और साथ में बिल लेकर आया और उस बच्चे के टेबल पर रखकर चले गया। उस लड़के ने उस आइसक्रीम को खाने के बाद पैसे दिए और वह चले गया।

जब वह वेटर वापस आया तो वह दंग रहे गया यह देखकर कि उस लड़के ने खाए हुए आइसक्रीम प्लेट के बगल में उसके लिए 15 रुपय का टिप छोड़ गया था।

उस लड़के के पास 50 रुपये होने पर भी उसने उस वेटर के टिप के बारे में पहले सोचा न की अपने आइसक्रीम के बारे में। उसी प्रकार हमें अपने फायदे के बारे में सोचने से पहले दूसरों के बारे में भी सोचना चाहिए। ◆◆◆

# क्यों चाहिए नागरिकता संशोधन कानून ?

••• -डॉ. आनंदिता सिंह

हम में से कोई भी इस बात से अनजान नहीं है कि हमारे पड़ोसी देशों में हिंदू, बौध, इसाई, सिक्ख, और अन्य गैर मुसलमान जनसंख्या पर अत्याचार के किस्से अनगिनत ही नहीं, रूह दहलाने वाले भी हैं। अनेक मौकों पर यह माना गया है कि पाकिस्तान व बांग्लादेश में हिंदुओं पर हो रहे अत्याचार की शुरुआत भारत राष्ट्र के विभाजन के उपरांत हुई, इस परिपेक्ष में हम 1946 के 'डायरेक्ट एक्शन डे' का जिक्र करना अक्सर भूल जाते हैं जहां पाकिस्तान के संस्थापक माने जाने वाले मोहम्मद अली जिन्ना ने साफ लफ्जों में यह कह दिया था कि 'हमें जंग नहीं चाहिए। यदि आपकी यह ख्वाईश है तो हम इसे बिना किसी झिझक के पूरा करेंगे। भारत या तो विभाजित होगा या नष्ट होगा।' जिन्ना के यह शब्द इस बात को भली-भांति दर्शाते हैं कि भारत का विभाजन और पाकिस्तान राष्ट्र का गठन हिंदू द्वेष की भावना के आधार पर हुआ था।

मोहम्मद अली जिन्ना 13 जुलाई 1947 को नई दिल्ली में एक पत्रकार सम्मलेन को संबोधित करते हुए अपनी इस बात पर अडिग रहे कि अल्पसंख्यक पाकिस्तान में निश्चित रूप से सुरक्षित रहेंगे। पाकिस्तान के कई और नेताओं ने भी इस विषय पर जिन्ना के पदचिह्नों का पालन किया। लियाकत अली खान ने 1950 में एक समझौते पर हस्ताक्षर किया, जिसमें यह स्पष्ट किया गया था कि 'पाकिस्तान की सरकार यह प्रतिज्ञा लेती है कि पाकिस्तानी अल्पसंख्यकों को बिना किसी धार्मिक भेदभाव के बराबर नागरिकता देगी और उन्हें एक सुरक्षित माहौल प्रदान करेगी। उन्हें जीविका, प्रार्थना, संपत्ति एवं, भाषण की पूर्ण स्वतंत्रता मिलेगी।'

विभाजन के समय मोहम्मद अली जिन्ना ने अनेकों ऐसे बयान व भाषण दिए, जिनमें अल्पसंख्यकों को यह आश्वासन दिया कि उनकी संस्कृति, धर्म, व संपत्ति को कोई भी क्षति नहीं पहुंचेगी। एक उदाहरण के लिए 11 अगस्त 1947 को जिन्ना ने अपने अध्यक्षीय संबोधन में कहा था आप आजाद हैं, आप अपने मंदिरों में जाने क लिए आजाद हैं, आप अपने मस्जिदों में जाने के लिए आजाद हैं, आप अपने किसी भी उपासना गृह में जाने के लिए इस पाकिस्तान में आजाद हैं।

1950 में गौर करने वाली बात यह रही कि जहां एक ओर लियाकत अली खान दस्तावेजों पर हस्ताक्षर कर रहे थे कि अल्पसंख्यक आवाम उनके देश में सुरक्षित है, वहीं दूसरी ओर भूपेंद्र कुमार दत्ता संविधान सभा में पूर्वी पाकिस्तान में रह रहे अल्पसंख्यकों की पीड़ा पर प्रकाश डाल रहे थे। 16 मार्च 1950 को उन्होंने संविधान सभा में कहा 'आज हम इस सभा में एक आपदा के प्रत्यक्ष खड़े हैं जो कि हम अल्पसंख्यकों के अस्तित्व को खतरे में डाले हुए है। रिपोर्ट में दिए गए आकड़ों को हम कम या ज्यादा मान सकते हैं, मृतकों की संख्या को कम माना जा सकता है, संपत्ति की क्षति के आकड़े भिन्न हो सकते हैं, वह महिलाएं जिनके सम्मान का हनन हुआ है, उनकी संख्या से हम हमेंशा अनभिज्ञ रहेंगे, लेकिन हम पूर्वी पाकिस्तान में 10 फरवरी से हो रहे अल्पसंख्यकों के उत्पीड़न को नजरंदाज नहीं कर सकते। यह घटनाएं मनोवैज्ञानिक रूप से दहला देने और बेचैन कर देने वाली हैं। भूपेंद्र कुमार दत्ता के साथ ही धीरेंद्र नाथ दत्ता ने भी संविधान सभा में यह चिंता व्यक्त की।

1950 में हिंदुओं पर हो रही क्रूरता का एक और वर्णन मिलता है जब 8 अक्टूबर 1950 को पाकिस्तान के प्रथम विधि व श्रम मंत्री जेएन मंडल ने प्रधानमंत्री लियाकत अली खान को अपना इस्तीफा देते हुए पत्र लिखा। इस पत्र में मंडल ने इस्तीफे का कारण बताते हुए अनुच्छेद 11-17 में विस्तार से कई ऐसी घटनाओं का वर्णन किया है जो किसी भी व्यक्ति को निस्तब्ध कर दें। साथ ही, अनुच्छेद 23 में मंडल ने लिखा है, मुझे यह आशा थी कि पूर्वी पाकिस्तान की सरकार और मुस्लिम लीग के सदस्य दिल्ली समझौते के प्रावधानों को लागू करेंगे, लेकिन समय के साथ मुझे यह एहसास हुआ है कि सरकार इस मामले में कोई

ठोस कदम लेने के लिए उत्सुक नहीं है। कई विस्थापित हिंदू जो दिल्ली समझौते के बाद भारत से वापस आये, अपनी संपत्ति, और अपना घर वापस हासिल करने में नाकाम रहें। इसी पत्र के अनुच्छेद 9 में मंडल ने पूर्वी पाकिस्तान की सरकार के हिंदू विरोधी नीतियों का भी वर्णन किया। इसके साथ-साथ पूर्वी पाकिस्तान में हालत कुछ यूं बिगड़े कि जेएन मंडल को 1951 में पाकिस्तान से भाग कर भारत में शरण लेनी पड़ी। हिंदू विरोधी दंगों और क्रूरता का अगला दौर आया 1964-65 में जब पाकिस्तान के केन्द्रीय संचार मंत्री साबुर खान ने सरे आम हिंदू विरोधी भावना को और हवा देते हुए बैठक करनी शुरू कि, 3 व 4 जनवरी को पाकिस्तान टाइम्स के कई रिपोर्ट में यह बात सामने आई है कि 3 जनवरी को पूर्वी पाकिस्तान में ब्लैक डे के रूप में मनाया गया था और इसी अप्लक्ष्य में सबुर खान ने अनेकों द्वेषपूर्ण भाषण दिए। सूत्रों की मानें तो एक भाषण में साबुर खान ने यह भी कह दिया था कि वह पाकिस्तान के हर वृक्ष के हर पत्ते को अल्लाह-अल्लाह बोलने पर मजबूर कर देंगे और हिन्दुओ को भी इस नियम का पालन करना होगा अन्यथा उनके लिए पाकिस्तान में कोई जगह नहीं होगी।

हैरत की बात यह है कि 1974 में पाकिस्तान की सरकार को ईश-निंदा पर कानून बनाने की आवश्यकता महसूस हुई 1964 के बाद आइये नजर डालते हैं 1971 पर जब पूर्वी पाकिस्तान में पश्चिम पाकिस्तान के उर्दू को राष्ट्रीय भाषा बनाने के निर्णय के खिलाफ आन्दोलन चल रहे थे। 1971 एक ऐसा साल रहा जब त्रिपक्षीय सेनाओं ने एक मुल्क की आजादी के लिए जंग लड़ी लेकिन सबसे ज्यादा हानि पहुंची पूर्वी पाकिस्तान में रह रहे हिंदू अल्पसंख्यक नागरिकों को। 1971 में दुनिया के मानचित्र पर बांग्लादेश एक स्वतंत्र देश बन कर उभरा और इसकी सबसे बड़ी कीमत चुकाई वहाँ के हिंदुओं ने। अमेरिकी सीनेटर एडवर्ड कैनेडी की रिपोर्ट- 'क्राइसिस इन साउथ एशिया' में इस बात की पुष्टि करने वाले प्रमाण मिलते हैं। सेनेटर कैनेडी ने लिखा है कि वे जब बांग्लादेश के गावों में गए तो भौंचक्के रह गए। कई जगह पर मानव शरीर पड़े सड़ रहे थे, बच्चे कंकालों के साथ खेल रहे थे, और कई घरों की बाहरी दीवार पर पीले रंग से अंग्रेजी का अक्षर लिखा हुआ था। यह साफ तौर पर एक निशान या पहचान थी जिसकी मदद से हिंदू घरों को केंद्रित करना आसान हो जाता था। यही बात सिडनी स्चंबेर्ग, (ढाका में न्यूयॉर्क टाइम्स के संवाददाता) ने भी अपनी रिपोर्ट पाकिस्तानी स्लॉटर देट निक्सन इग्नोर्ड में लिखी है। 1971 का नरसंहार अत्यंत ही भद्र था, जिसमे अनुमानित तौर पर 3 मिलियन हिंदुओं का कत्ले आम हुआ।इसके परिणाम स्वरूम भारत में शरणार्थियों की मानो जैसे बाढ़ आ गयी, सीनेटर कैनेडी लिखते है कि कुल 10 मिलियन शरणार्थी 1971 के दौरान भारत आये, जिनमे से 8 मिलियन यानि कि 80: हिंदू थे।

बांग्लादेश में रह रहे हिंदू और मुस्लिम आबादी का शैक्षिक आर्थिक, और सामाजिक स्तर समान था, इसीलिए यदि मुस्लिम जनसंख्या एक दर से बढ़ रही थी तो हिंदू जनसंख्या में भी वही स्तर दिखना चाहिए, लेकिन हुआ ऐसा कि, जहाँ 1971 के दौर में हिंदू जनसंख्या 26 मिलियन होनी चाहिए, वह बस 13 मिलियन है, इस अकड़े में लापता 13 मिलियन में से जहाँ 8-9 मिलियन हिंदु विस्थापित हो कर भारत आ गए, वही बचे हुए 3 मिलियन हिंदू, जिनका कोई अभिलेख नहीं है, द्वेष बलि चढ़ गए।

इस स्तर पर जन-धन का नुकसान इस पूरे विश्व को अंधकार की ओर ले जा सकता है, यदि सोचा जाए तो मृतकों की यह संख्या कितनी भीषण होती यदि भारत ने बाहे खोले इन हिंदुओं को सहायता न दी होती, एक ओर विशाल बंगाल की खाड़ी, दूजी ओर हिंदुस्तान की सीमा और बीच में ऐसा नर्क जहाँ न बहु-बेटियां सुरक्षित थी और न जीने का अधिकार था। ऐसे में इन हताश हिंदुओं को सहारा था तो सिर्फ भारत का, जो आज उन्हें मिलने जा रहा है। आज उन्हें सम्मान के आभूषण मिलने जा रहे है जिससे लैस हो कर वह अपना जीवन एक हकदार और जिम्मेदार नागरिक की तरह जी सकेंगे। ◆◆◆

# बंटवारे पर बाबा साहब ने क्या कहा

••• -नवरंग कुमार

शुरू करते हैं बाबा साहब की बातों और उनके द्वारा लिखित संविधान से। संविधान के प्रारंभिक शब्द 'इंडिया दैट इज भारत।' भारतीय गणतंत्र को राष्ट्र-राज्य की मान्यता देते हैं। राष्ट्र-राज्य वह अवधारणा है जिसमें राज्य पुरातन सभ्यता और सांस्कृतिक पहचान का उत्तराधिकारी होता है और उसके ऊपर पुरातन पहचान को बनाए रखने का उत्तरदायित्व होता है।

इसी उत्तरदायित्व के पालन में नागरिकता विधेयक द्वारा पड़ोस में प्रताड़ित हिंदू, सिख, बौद्ध, जैन, पारसी एवं ईसाई धर्मावलंबियों को राहत देना भारतीय संघ की नैतिक एवं संवैधानिक बाध्यता है। बाबा साहब आंबेडकर ने अपनी किताब पाकिस्तान और द पार्टीशन ऑफ इंडिया में विभाजन के कई महत्वपूर्ण अनछुए सवाल उठाए हैं। डॉ. आंबेडकर ने कहा था जब तक पाकिस्तान से एक-एक हिन्दू भारत वापस नहीं आ जाएगा तबतक विभाजन की प्रक्रिया शायद खत्म नहीं होगी।तो क्या आंबेडकर जानते थे जो गरीब पिछड़े, अनुसूचित जाति के हिन्दुओं को हम पाकिस्तान में छोड़ आए हैं वह इस्लामिक पाकिस्तान से एक दिन वापस जरूर भारत में शरण लेंगे। बाबा साहब को शायद इस बात का भान था कि जिन्ना ने भारत-पाकिस्तान का विभाजन कराते वक्त भले ही यह कहा हो पाकिस्तान इस्लामिक मुल्क न होकर धर्मनिरपेक्ष मुल्क होगा। लेकिन शायद ही उसके बातों पर किसी को भरोसा रहा हो और बाबा साहब की आशंका इस बात की तस्दीक भी करती है। ऐसे में आज उसके नागरिकता पर सवाल क्यों है जिसे बताये बगैर हमने हजारों साल के इस देश को दो टुकड़े करने को स्वीकार कर लिया था। आज नागरिकता संशोधन विधेयक की चर्चा के साथ यह पूछना लाजिमी है कि क्या भोले-भाले गरीब, अनपढ़ जनता को क्या इस विभाजन से कुछ लेना देना था? क्या 14 अगस्त 1947 को उन्हें पता था कि हिंदुस्तान का विभाजन धर्म के आधार पर पाकिस्तान के रूप में हो गया है। क्या उन्हें पता था वह पाकिस्तान जिसे जिन्ना ने सेक्युलर नेशन कहा था इस्लामिक रिपब्लिक हो जाएगा?

## विपक्ष भ्रम में क्यों

नागरिकता विधेयक के कानून बनने, एनआरसी लागू होने और अयोध्या में राम मंदिर पर सुप्रीम कोर्ट के फैसले के बावजूद भी न जाने विपक्ष किस भ्रम में पड़ा हुआ है और अल्पसंख्यक तुष्टीकरण या यह भी कहा जा सकता है कि मुस्लिम वोट बैंक का लालच उन्हें विरोध के किस धरातल पर ले जायेगा, जबकि सत्तारूढ़ दल ने इन मसलों पर हो रही सारी आलोचनाओं को दरकिनार साफ संकेत दिया है कि वे वही कर रहे हैं जिनका वादा उन्होंने प्रत्येक चुनाव के पहले जनता के समक्ष पेश किये गये मैनिफेस्टो में किया था। इन प्रयासों से देश के बहुसंख्यक समाज के मन में अपने ही देश में दोयम दर्जे का नागरिक होने का दंश निकल रहा है। इनका विरोध करने वालों के एक बात समझ लेनी चाहिए कि इस देश में बहुसंख्यक समाज की भावनाओं की उपेक्षा करके धर्म निरपेक्ष समाज की स्थापना नहीं हो सकती।

## किस भ्रम में विपक्ष

नरेंद्र मोदी और अमित शाह की नेतृत्व वाली भाजपा द्वारा इस विधेयक का अनुमोदन भारतीय सभ्यता के एक गहरे घाव पर मरहम का काम करेगा, जिससे कि बहुसंख्य आबादी को नागरिकता संबंधी कानूनी अधिकार तो प्राप्त होंगे साथ ही उन्हें यह भरोसा भी होगा आजादी के बाद यह पहली सरकार है जो सबका साथ, सबका विकास और सबका विश्वास करने में भरोसा करती है।◆◆◆

## नेहरू-लियाकत समझौता

देश के बंटवारे के बाद पलायन की समस्या की शुरुआत उस समय हुई जब दिसंबर 1949 में भारत पाकिस्तान के आर्थिक संबंध टूट गए। दस लाख लोगों ने दोनों देशों की सीमा पार की। इसके बाद आठ अप्रैल 1950 को नेहरू-लियाकत समझौता हुआ। तय हुआ कि दोनों देश अपने यहां के अल्पसंख्यकों के हितों की रक्षा करेंगे। इतना ही नहीं, यह भी कहा गया है कि जो भागकर आए हैं उन्हें लौटकर अपनी संपत्ति बेचने का अधिकार होगा, अपहृत औरतों को लौटाना होगा और जबरन कराया गया धर्म परिवर्तन अमान्य किया जाएगा, लेकिन कुछ ही महीने बाद पाकिस्तान से दस लाख हिंदू भागकर भारत आ गए। ◆◆◆

## संसद द्वारा पारित नागरिकता कानून हमारी संवैधानिक जवाबदेही

नागरिकता संशोधन विधेयक, 2019 यानी सिटीजनशिप अमेंडमेंट बिल राज्यसभा से पास हो गया। राज्यसभा में इस बिल के पक्ष में 125 और विरोध में 105 वोट पड़े, जबकि लोकसभा में इस बिल के पक्ष में 311 वोट, वहीं विरोध में 80 वोट पड़े थे। राष्ट्रपति की मंजूरी मिलने के बाद यह बिल कानून बन गया है। इस बिल को लेकर दोनों सदनों में व्यापक बहस हुई।

सत्ता पक्ष ने इसे एतिहासिक बताया तो कांग्रेस और दूसरे विपक्षी दलों के नेताओं ने इसे काला कानून कहा। कोई इसे हिंदू राष्ट्र की ओर कदम बढ़ाने की बात कह रहा है तो कोई मुसलमानों के साथ हो रहे कथित भेदभाव को लेकर सरकार को घेरता दिखाई दिया। दोनों पक्ष अपनी-अपनी बात रखने के लिए संविधान का हवाला देते दिखे। होना भी यही चाहिए कि लोकतंत्र में संविधान की संप्रभुता बनी रहे तभी देश की एकता अखंडता बनी रह सकती है। इसलिए जरूरी है कि बाबा साहब भीमराव आंबेडकर की नागरिकता के विषय में क्या राय है और देश के विभाजन का स्वरूप क्या था, उसे समझा जाए। ◆◆◆

## भूल का देर से हुआ प्रायश्चित

पाकिस्तान और बांग्लादेश में इस्लामी कट्टरवाद को मिली छूट से त्रस्त हिंदू जब जान बचाकर धर्मनिरपेक्ष भारत में आते तो यहां कभी उपेक्षा मिलती और कभी तिरस्कार। एक तरफ हत्या, दुष्कर्म, अपहरण और जबरन धर्मांतरण की तलवार लटकती तो दूसरी तरफ भारत में जटिल कानूनी प्रक्रिया या कैंपों में नजरबंदी का खौफ सताता। इन देशों में उत्पीड़न झेल रहे हिंदू, बौद्ध या सिखों ने बंटवारे की मांग नहीं की थी। बंटवारा उन पर थोपा गया था। 1947 से पाकिस्तान और फिर 1971 के बाद बांग्लादेश में चल रहा जाति संहार बंटवारे की त्रासदी का ही विस्तृत संताप है। नागरिकता विधेयक इस भूल का देर से हुआ प्रायश्चित है। लेकिन आज जब 70 साल पुरानी गलतियों को सुधारने की पहल तेज हुई है तो उसे फिर हिन्दू मुस्लिम की बहस में उलझाने की कोशिशें भी तेज हुई है। नागरिकता संशोधन विधेयक विशिष्ट परिस्थितियों से उत्पन्न मानवीय संकट का प्रत्युत्तर है। यदि इतनी बड़ी विभीषिका से प्रभावित लोगों के लिए विशिष्ट भेद के अंतर्गत कानून बनाने का तर्कसंगत आधार नहीं माना जाएगा तो फिर किसे माना जाएगा? इसलिए पाकिस्तान, बांग्लादेश और अफगानिस्तान में धार्मिक उत्पीड़न व अत्याचार के शिकार हुए अल्पसंख्यक हिन्दू, सिख बौद्ध, जैन, पारसी, ईसाई भारतीय विस्थापितों को नागरिकता मिलेगी। ◆◆◆

# सैनिक स्कूल में पहली बार छात्राओं का दाखिला

रक्षामंत्री राजनाथ सिंह ने सैनिक विद्यालयों में सत्र 2021-22 के लिए लड़कियों के चरणबद्ध तरीके से प्रवेश के प्रस्ताव को मंजूरी दे दी है। यह फैसला मंत्रालय ने दो साल पहले मिजोरम के सैनिक विद्यालय छिंगछिप में लड़कियों के प्रवेश की प्रायोगिक परियोजना की सफलता को देखते हुए लिया गया है। रक्षामंत्री ने संबंधित अधिकारियों को इस फैसले को निर्बाध तरीके से लागू करने के लिए सैनिक विद्यालयों में पर्याप्त महिला कर्मचारियों और आवश्यक आधारभूत संरचना की उपलब्धता सुनिश्चित करने का निर्देश दिया है। यह फैसला सरकार के समग्रता, लैंगिक समानता, सशस्त्र बलों में महिला भागीदारी को बढ़ाने के उद्देश्य की पूर्ति और प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी द्वारा चलाए जा रहे 'बेटी बचाओ, बेटी पढ़ाओ' अभियान को मजबूत करने के लक्ष्य के अनुरूप है। ♦♦♦

## गुरूग्राम में बनेगा देश का पहला वेद विश्वविद्यालय

साइबर सिटी में विश्व हिंदू परिषद वेद विश्वविद्यालय की स्थापना की जा रही है। विहिप वेद विश्वविद्यालय में देश-प्रदेश के विद्यार्थी न केवल शिक्षा ग्रहण कर सकेंगे, बल्कि वेदों पर शोध भी कर सकेंगे। एयरपोर्ट के नजदीक सिहरौल बॉर्डर के समीप इस विश्वविद्यालय को खोलने की प्रक्रिया शुरू करवाने के लिए किराए के भवन को तलाशने की प्रक्रिया चल रही है। आगामी सत्र से विश्वविद्यालय की शुरूआत कर दी जाएगी। इसमें आधुनिक वैदिक विज्ञान व प्रौद्योगिक की पढ़ाई होगी। ♦♦♦

## जिहादी संगठन इस्लामिक स्टेट का देश में फैलता मकड़जाल

15 अक्तूबर के अनुसार राष्ट्रीय जांच एजेंसी से संबंधित आतंकवाद विरोधी संगठन और स्पेशल टास्क फोर्स की बैठक में राष्ट्रीय जांच एजेंसी के इंस्पेक्टर जनरल आलोक मित्तल ने बताया कि अब तक देश में आईएसआईएस से संबंधित 127 व्यक्तियों को गिरफ्तार किया जा चुका है। इनमें से सबसे अधिक लोग तमिलनाडु में पकड़े गए जिनकी संख्या 33 है। उत्तर प्रदेश में 19, केरल में 17 और तेलंगाना में 14 लोग पकड़े गए हैं। इस अधिवेशन में गृह राज्यमंत्री जी किशन रेड्डी, राष्ट्रीय सुरक्षा सलाहकार अजीत डोवाल और नागालैंड के राज्यपाल आर.एन.रवि भी मौजूद थे। डोवाल ने कहा कि राष्ट्रीय जांच एजेंसी को आतंकवाद के उन्मूलन के लिए अपनी जांज को बेहतर बनाना होगा। उन्होंने यह स्वीकार किया कि राष्ट्रीय जांच एजेंसी ने कश्मीर में आतंकवाद को रोकने के लिए शानदार काम किया है। राष्ट्रीय जांच एजेंसी के आलोक मित्तल ने कहा कि गिरफ्तार किए गए लोगों ने यह स्वीकार किया है कि वे जाकिर नाइक के भाषणों को सुना करते थे और उसके प्रेरणा से ही वे आतंकवादी गतिविधियों में शामिल हुए हैं। मित्तल ने कहा कि इसके बाद हमने जाकिर नाइक के संगठन इस्लामिक रिसर्च फाउंडेशन के खिलाफ रपट दर्ज करवाई। इसी तरह से जम्मू-कश्मीर में भी कुछ पृथकतावादी तत्वों को भारत स्थित पाकिस्तान उच्चायोग द्वारा आर्थिक सहायता दी जाती थी। उन्होंने यह दावा किया कि जमात-उल-मुजाहिदीन बांग्लादेश ने बिहार, महाराष्ट्र, केरल और कर्नाटक में अपने पैर पसारे हैं और इससे संबंधित 125 संदिग्ध व्यक्तियों का पता लगाया गया है।' ♦♦♦

## गिरफ्त में जयपुर के गुनाहगार

••• -राघवेन्द्र सिंह

धमाकों के बाद ईमेल भेजकर जिम्मेदारी लेने वाले उत्तर प्रदेश के मौलवी गंज निवासी शहबाज हुसैन उर्फ शहबान अहमद को एटीएस ने सबसे पहले 8 सितम्बर 2008 को गिरफ्तार किया। इसके बाद 23 दिसंबर 2008 को यूपी के आजमगढ़ से मोहम्मद सैफ को, 29 जनवरी 2009 को मोहम्मद सरवर आजमी, 23 अप्रैल 2009 को सैफुर्रहमान उर्फ सफैुर्र गिरफ्तार किया गया। पांचवे आरोपी सलमान को निजामाबाद, उत्तर प्रदेश से 3 दिसंबर 2010 को गिरफ्तार किया गया। वहीं छठवें आरोपी आरिज उर्फ जुनैद निवासी आजमगढ़ को दिल्ली पुलिस की स्पेशल सेल ने तथा दो अन्य आतंकियों असद्दुल्ला अख्तर व अहमद सिददी बप्पा उर्फ यासीन भटकल निवासी आजमगढ़ को हैदराबाद पुलिस ने गिरफ्तार किया।

जयपुर बम ब्लास्ट केस में नामजद तीन आतंकी आजमगढ़ निवासी मिर्जा शादाब बेग उर्फ मलिक, साजिद बट और मोहम्मद खालिद 11 साल बाद भी पुलिस की गिरफ्त से दूर हैं। राजस्थान एटीएस के अलावा अन्य शहरों की स्पेशल सेल भी इनकी तलाश कर रही है। ◆◆◆

## देश का पहला डिजिटल गांव

माना जाता है कि गांव में बदलाव बहुत धीमे गति से होता है, लेकिन तकनीक बहुत कुछ बदल देती है, लोगों के रहन-सहन से लेकर उनके देखने और सोचने का तरीका, सब कुछ बदल देती है तकनीक। अहमदाबाद से 100 किमी दूर अकोदरा गांव में हुए बदलाव को देख तकनीक की ताकत का अंदाजा लगाया जा सकता है। अकोदरा देश का पहला पूरी तरह से डिजीटल गांव है। अकोदरा के सफल प्रयोग के बाद डिजीटल इंडिया का सपना और अधिक विश्वसनीय लगने लगा है क्योंकि ऐसा माना जाता था की गांव डिजिटल इंडिया के राह में सबसे बड़ी चुनौती होंगे। आज अकोदरा गांव में लोग 5 रूपये से ज्यादा के ट्रांजेक्शन मोबाइल या फिर कार्ड से करते हैं। चाहे गांव का बाजार हो या मंडी अब लोगों ने कैश का इस्तेमाल बंद कर दिया है।

डिजिटाइज होने से अकोदरा गांव में लेन-देन के तरीके, निवेश और खरीदारी के तरीकों के साथ, लोगों के निजी जिंदगी में भी काफी कुछ बदला है। गांव में आंगनबाड़ी से लेकर हायर सेकेंडरी तक यह बदलाव देखा जा सकता है। अब ब्लैकबोर्ड की जगह स्मार्ट बोर्ड ने ले ली है। पढ़ाई टीवी के जरिए हो रही है और बस्ते में बैग नहीं टैबलेट हैं। नई तकनीक से पढ़ाए जाने के कारण बच्चे भी पढ़ाई में दिलचस्पी ले रहे हैं, स्कूलों में उपस्थिति बढ़ी है। गांव के ई-हेल्थ सेंटर खुला है जहां गांववालों के मेडीकल रिकॉर्ड बटन दबाते ही मिल जाता है। टेलिमेडीसिन की सुविधा हो जाने के कारण यहां बैठे-बैठे दूसरे बड़े शहरों के डॉक्टरों की राय भी ली जा सकती है। अकोदरा में यह बदलाव इतना असान भी नहीं था। यह गांव आईसीसीआई बैंक का ड्रीम प्रोजेक्ट था। इस गांव को डिजीटल बनाने पर बैंक अक्तूबर से काम कर रहा है। प्रधानमंत्री नरेंन्द्र मोदी ने इस गांव को पहले डिजिटल गांव का खिताब दिया है। कैश से डिजीटल पेमेंट तक का सफर तय करने में युवाओं का अहम योगदान रहा। गांव के युवाओं की मदद से बैंक ने अन्य ग्रामीणों की सोच भी बदली और गांव में कैश में लेनदेन लगभग समाप्त हो गया। गांववालों का मानना है कि डिजिटाइजेशन से उनकी सेविंग्स भी बढ़ी है। इस बदलाव का असर यहां के सामाजिक जीवन पर भी दिख रहा है। आसपास के गांव के लोग अब अपनी लड़कियों की शादी अकोदरा गांव में करना चाहते हैं ताकि शादी के बाद उनकी लड़कियों को मार्डन रहन-सहन और बेहतर सुविधाएं मिलें। ◆◆◆

-कर्म सिंह ठाकुर

काफी लंबे समय से प्रदेश की हसीन वादियां अंतरराष्ट्रीय स्तर के हवाई अड्डों का इंतजार कर रही है। आखिरकार मुख्यमंत्री जयराम ठाकुर का ड्रीम प्रोजेक्ट धरातल पर उतरने के अंतिम चरण पर खड़ा है। जब-जब माननीय मुख्यमंत्री केंद्र सरकार के मंत्रियों से रू-ब-रू हुए उन्होंने मंडी में अंतरराष्ट्रीय हवाई अड्डे के निर्माण का पुरजोर समर्थन किया। कई बार इस हवाई अड्डे के निर्माण के लिए जिला हमीरपुर के जाहू नामक स्थल की चर्चाएं भी खूब सुर्खियों में रही। लेकिन आखिरकार मुख्यमंत्री जयराम ठाकुर द्वारा केंद्रीय सत्ता को विश्वास में लेकर मंडी जिला के बल्ह नामक स्थल पर इसके निर्माण के लिए राजी कर ही दिया। केंद्र सरकार शत-प्रतिशत इसके निर्माण का खर्चा उठाने के लिए भी तैयार हो गई है। इस हवाई अड्डे की चालू होने पर केंद्र व राज्य हिस्सेदारी 51/49 की होगी।

वर्तमान समय में हिमाचल प्रदेश में शिमला, कुल्लू तथा कांगड़ा में तीन अ ड्डे हैं। काफी लंबे समय से प्रदेश के इन तीन हवाई अड्डों के विस्तार की रूप रेखाएं भी बन रही थी लेकिन धरातल पर पहुंचने में सफल नहीं हो पाई। इसी परिप्रेक्ष्य में रेल मार्ग भी हिमाचल में छुक-छुक तक ही सीमित रहा। दूसरी तरफ जलमार्ग के माध्यम से सरकार कुछ नवीन कदम उठाने की रूपरेखा बना रही है। लेकिन इन्हें भी विकसित होने में समय लगेगा। ऐसे में हिमाचल प्रदेश को केंद्र सरकार तथा बड़े बड़े उद्यमियों के निवेश की सख्त आवश्यकता है।

हिमाचल की आर्थिक स्थिति तथा बेरोजगारी के आंकड़े दिन प्रतिदिन बेलगाम होते जा रहे हैं। ऐसे में प्रदेश में उपलब्ध संसाधनों तथा प्राकृतिक सौंदर्य का दीदार करवाने के लिए बेहतर आवागमन का मार्ग होना अति आवश्यक है यदि पर्यटन की दृष्टि से अंतरराष्ट्रीय हवाई अड्डे को देखा जाए तो आने वाले समय में हिमाचल प्रदेश की पर्यटन नगरी को अंतरराष्ट्रीय स्तर पर नई पहचान मिलेगी और रोजगार के नवीन साधन भी सृजित होंगे। हिमाचल की प्राकृतिक सुंदरता यूरोप के अति सुंदर शहरों के समतुल्य है। यहां पर अंतरराष्ट्रीय स्तर की फिल्मों की शूटिंग की जा सकती है लेकिन अधिकतर फिल्म निर्माता सुविधाओं के अभाव के कारण हिमाचल की हसीन वादियों का दीदार नहीं करते हैं। ऐसे में यदि अंतरराष्ट्रीय स्तर का हवाई अड्डों हिमाचल के बीचो-बीच स्थित मंडी जिला मे निर्मित होता है तो निश्चित तौर पर हिमाचल को अंतरराष्ट्रीय स्तर पर नई पहचान के साथ-साथ आर्थिक लाभ भी होगा।

इस अड्डे के निर्माण के लिए करीब 3000 बीघा जमीन का अधिग्रहण किया जाएगा। मंडी जिला में बल्ह घाटी में जहां पर भूमि चयन का चयन किया गया है। इस घाटी को 'मिनी पंजाब' के नाम से भी जाना जाता है। मिनी पंजाब इसलिए कहा जाता है क्योंकि यहां की भूमि पंजाब की भूमि की तरह सोना उगलती है। यहां के किसान अपनी भूमि से हर वर्ष करोड़ों रुपए का फल- सब्जी का उत्पादन करते हैं। लेकिन विकास के लिए प्रदेश वासी बड़ी-बड़ी कुर्बानियां देने के लिए भी तैयार रहते हैं। भाखड़ा बांध, पोंग बांध, कोलडैम बांध तथा टू लेन रोड निर्माण में अनेकों परिवारों को विस्थापन की पीड़ा झेलनी पड़ी है। अब बारी मंडी जिला के बल्ह वासियों की है। चलो प्रदेश के विकास के लिए यदि विस्थापन भी करना पड़े तो शायद प्रदेशवासियों खुशी-खुशी से कर लेंगे लेकिन यदि उसी विस्थापन पर राजनीतिक रोटियां सेकने का काम शुरू हो जाए तो शायद उन किसानों को सबसे ज्यादा दुख होता है जो उस भूमि को अपनी मां के समतुल्य मानते हैं तथा कई सदियों से कृषि व्यवस्था से ही अपने परिवार का जीवन-यापन करते आ रहे हैं। मुख्यमंत्री का संबंध भी मंडी जिला से ही है और ऐसे परिवार से रहा है जिसका मुख्य व्यवसाय कृषि तथा बागवानी ही रहा है तो माननीय मुख्यमंत्री से भी निवेदन रहेगा कि भी किसान की पीड़ा को भी समझे ताकि उन्हें किसी तरह बड़े विस्थापन का दर्द न झेलना पड़े तथा हवाई अड्डों के निर्माण के लिए तथा सुचारू संचालन के लिए विस्थापित परिवारों को ही नौकरी में वरीयता देने का प्रावधान प्रमुखता से होना चाहिए। ◆◆◆

# समावेशी भाव से गौ सेवक बनकर स्वस्थ रहें

-वि.सं.के. शिमला

समग्र, समावेशी भाव से गाय की सेवा करने पर ही स्वास्थ्य के विभिन्न पहलुओं पर विचार करके आरोग्यता प्राप्त की जा सकती है। यह विचार शिमला के राजकीय आदर्श कन्या वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय पोर्टमोर **'गौमाता का मानव स्वास्थ्य पर प्रभाव'** विषय पर आयोजित संगोष्ठी में आरोग्य भारती के राष्ट्रीय संगठन मंत्री अशोक वार्ष्णेय ने व्यक्त किये। कार्यक्रम में प्रदेश के मुख्यमंत्री जयराम ठाकुर मुख्य अतिथि के रूप में उपस्थित रहे वहीं आरोग्य भारती के संगठन मंत्री अशोक वार्ष्णेय मुख्य वक्ता जबकि पशुपालन एवं गौसेवा आयोग के अध्यक्ष वीरेंद्र कंवर विशेष अतिथि के रूप में उपस्थित रहे। अपने उद्‌बोधन में अशोक वार्ष्णेय ने कहा कि आरोग्य भारती द्वारा देशभर में किये जो कार्यों का विस्तार से वर्णन किया। डॉ0 अशोक वार्ष्णेय ने कहा कि आज विश्व में दूध के क्षेत्र में अनेक प्रकार के अनुसंधानात्मक कार्य हो रहे हैं। उन्होंने कहा कि जर्सी गाय के दूध में गुणवत्ता नहीं होती भले ही वह कितना भी अधिक दूध दे। जबकि देशी नस्ल की गायों के दूध की और स्वास्थ्यवर्धक गुणों की कोई तुलना नहीं है। उन्होंने पंचगव्य की स्वास्थ्य के लिए उपयोगिता पर भी प्रकाश डाला। इस अवसर पर मुख्यमंत्री जयराम ठाकुर ने कहा कि आज लोग बड़ी शान से बताते हैं कि हमारा एक बेटा अमेरिका में है दूसरा ब्रिटेन में है लेकिन जब उनके खुद के बारे में पूछा जाता है कि वे कहां पर रहते हैं तो वे शर्म से बताते हैं कि वह वृद्धाश्रम में रहते हैं।

इसी प्रकार की हालत आज गायों की भी हो गयी है उनसे लोग दूध दही जैसे अमृत तुल्य पदार्थों को प्राप्त करते हैं लेकिन बाद में उनको सड़क पर छोड़ देते हैं। उन्होंने भारतीय संस्कृति और संस्कारों में गाय के महत्व को बताते हुए कहा कि भारतीय कृषि का आधार गाय ही रही है। उन्होंने गाय की दुर्दशा का वर्णन करते हुए कहा कि भारतीय गांवों में प्रवेश करते ही देसी गाय हर घर आंगन की शोभा होती थी लेकिन दुर्भाग्य से आज गांवों में भी गायों की स्थिति बहुत दयनीय हो गयी है। उन्होंने कहा कि भारतीय समाज हर प्रकार से समृद्ध समाज रहा है लेकिन कुछ षडयंत्रों के कारण ऐसी व्यवस्था बना दी गयी कि भारतीय समाज से सभी प्रकार की समृद्धियों को धीरे-धीरे समाप्त कर दिया गया। यही कारण है भारतीय देशी गाय की दुर्दशा हो रही है। वहीं आरोग्य भारती के राष्ट्रीय सचिव डॉ0 राकेश पंडित ने कहा कि देसी गाय के संवर्धन से किसानों की आय को कई गुना बढ़ाया जा सकता है। खेती में अत्यधिक रसायन के प्रयोग से जमीन विशयुक्त हो गयी है।

अगर पर्यावरण को शुद्ध रखना है तो देसी गाय के महत्व को हमें समझना होगा। पशुपालन मंत्री एवं गौसंवर्धन बोर्ड के अध्यक्ष वीरेंद्र कंवर ने अपने उद्‌बोधन में कहा कि भारत का चिकित्सा विज्ञान गौ आधारित रहा है। उन्होंने कहा कि जब देश हरित और श्वेत क्रांति की ओर बढ़ा तो इससे उत्पादन में तो बढ़ोत्तरी हुई लेकिन खेती विषयुक्त हो गयी। आज मानव जीवन पर अनेक प्रकार के संकटों का कारण यही है कि मनुष्य ने गाय के महत्व को नकारना प्रारम्भ कर दिया। उन्होंने जानकारी देते हुए बताया कि प्रदेश में गौ संरक्षण के कार्य शुरू किये गए हैं। उन्होंने बताया कि प्रदेश में अनेक गौ अभ्यारण्यों का निर्माण किया जा रहा है। वीरेन्द्र कंवर ने कहा कि इस प्रकार का अभ्यारण्य कोटला ए अभिशप्त हैं।

मानकर चलिए कि आज भी हमारे कदम, भविष्य को देखकर नहीं बढ़े, तो मौजूदा स्थिति वापस लौटकर जाने के लिए नहीं आई है। अब तो अपना ही मन प्रश्न करता है कि अपनी ही अगली पीढ़ी के जीवन के लिए, जो स्थितियां हम छोड़ जाएंगे, वे हमें खुद को मिली परिस्थितियों से कितने गुना बदत्तर होंगी? इस स्थिति के आने और आकर स्थाई हो जाने के कारणों की खोज में जब हम निकलते हैं, तो पाते हैं कि जिंदगी के हर हिस्से पर 'राज्य' का ही कब्जा शायद मुख्य कारण है। समाज की सक्रियता व सामूहिक बौद्धिकता तो कहीं दिखती ही नहीं। उपर से, हमने भी मान लिया है कि जो कुछ करना है, वह 'सरकार' को ही करना है। दुर्दशाओं की एक बड़ी श्रृंखला है। हर दुर्दशा के मूल में, समाज की सामूहिक बौद्धिकता, उसकी सक्रिय भागीदारी और सबकी समाज संचालन में दिल से उपस्थिति का अभाव है।

बावजूद इसके, अच्छे कल के लिए की जाने वाली कोशिशें बंद नहीं हुई हैं। वे कोशिशें छोटी हो सकती हैं, बिखरी हुई हो सकती हैं, या सबको न भी दिखाई पड़ती हों, पर वे हैं तो सही। जरूरत बस, बेहतर स्तर पर उनकी पहचान की है, क्योंकि समाज-जीवन के रसायन शास्त्र में ये ही 'उत्प्रेरक' हैं। ◆◆◆

हिंदी बोलने वाले को भारत में भले ही शर्म महसूस होती हो लेकिन देश के बाहर ऐसा नहीं है। यह हम नहीं हालिया सर्वे के मुताबिक अमेरिका में हिंदी भाषा सबसे अधिक बोली जाने वाली भारतीय भाषा है। हिंदी पहले नंबर पर उसके बाद दूसरे व तीसरे नंबर पर गुजराती और तेलगू है। 1 जुलाई 2018 तक 8.74 लाख लोग यूएस में हिंदी बोलते हैं। इस सर्वे के अनुसार साल 2017 से 2018 के बीच हिंदी भाषा बोलने वालों में मामूली वृद्धि 1.3 फीसदी हुई है। इस सर्वे में अमेरिका के 20 लाख से ज्यादा परिवारों को शामिल किया गया। इस तरह यह आंकड़ा गवाह है कि भारत के अलावा अन्य देशों में भी हिंदी भाषा का प्रचलन बढ़ रहा है। ◆◆◆

## संयुक्त राष्ट्र संघ की 21वीं सदी की अनुकरणीय घोषणा

संयुक्त राष्ट्र संघ की जनरल एसेम्बली ने वर्ष 2005 में 21वीं सदी में अन्तर्राष्ट्रीय रिश्तों को मजबूत करने में एकता को एक बुनियादी मूल्य के रूप में पहचाना। इस परिपेक्ष्य में सं.रा.सं. द्वारा 20 दिसम्बर को प्रतिवर्ष अन्तर्राष्ट्रीय मानव एकता दिवस के रूप में मनाने की घोषणा की गयी। जिसका उद्देश्य सदस्य देशों की सरकारों तथा गैर-सरकारी संस्थाओं को गरीबी उन्मूलन तथा सामाजिक विकास को प्रोत्साहन देने के प्रति उनकी प्रतिबद्धता का स्मरण कराना है। यह दिवस विश्व के लोगों को प्रगतिशील पद्धतियों को अपनाकर गरीबी उन्मूलन के उपायों को आपसी विचार-विमर्श के द्वारा खोजने के लिए प्रेरित करता है। इस मुहिम के अन्तर्गत निम्न बिन्दुओं पर विचार-विमर्श किया जाता है। 1. बारूदी सुरंगों पर प्रतिबन्ध लगाना 2.जरूरतमंदों को स्वास्थ्य तथा दवाईयाँ सुलभ कराना 3.प्राकृतिक आपदाओं तथा मानव निर्मित आपदाओं से पीड़ित लोगों को राहत पहुँचाना 4. विश्व एकता तथा विश्व शान्ति को बढ़ावा देना 5. विश्वव्यापी शिक्षा के लक्ष्यों को अर्जित करना 6. गरीबी, भ्रष्टाचार तथा आतंकवाद के खिलाफ मुहिम चलाना आदि। इस दिवस के उपरोक्त लक्ष्यों को प्रिन्ट, इलेक्ट्रॉनिक्स तथा सोशल मीडिया, शिक्षण संस्थानों, भाषणों, वाद-विवाद, विभिन्न सरकारी एवं गैर सरकारी संगठनों आदि के माध्यम से अधिक से अधिक प्रचारित तथा प्रसारित करना चाहिए। ◆◆◆

## विश्व को आतंकवाद से बचाने की जरूरत

विश्व को आतंकवाद से बचाने की जरूरत मध्य एशिया की हालत प्रतिदिन बदतर होती जा रही है। सीरिया में तो लगभग तीन साल पहले से ही गृहयुद्ध चल हा है जिसमें कई लाख लोगों ने पड़ोसी देशों में शरण ले रखी है। यही हाल इराक में है। अफगानिस्तान पहले से ही तलिबानी आतंक के दौर से गुजर रहा है। पाकिस्तान भी तालीबानी कहर से अछूता नहीं रह सका है। इसी तरह से कई उत्तरी अफ्रीकी देशों में किसी न किसी आतंकी संगठन का आतंक अपने चरम पर है। आतंकवादी बीच-बीच में अमेरिका, चीन, रूस और भारत में आतंकवादी विस्फोट कर आतंक मचाते रहते हैं। भारत में भी समय-समय पर अलग-अलग शहरों में विस्फोटों का सिलसिला चलता रहता है। हालांकि भारत सरकार व राज्य सरकारों द्वारा अब इस पर काबू पाने की हर संभव कोशिश की जा रही है। ◆◆◆

# बालासुंदरी मंदिर से जिले को सिंगल यूज प्लास्टिक मुक्त बनाने को प्रशासन की पहल

...साभार

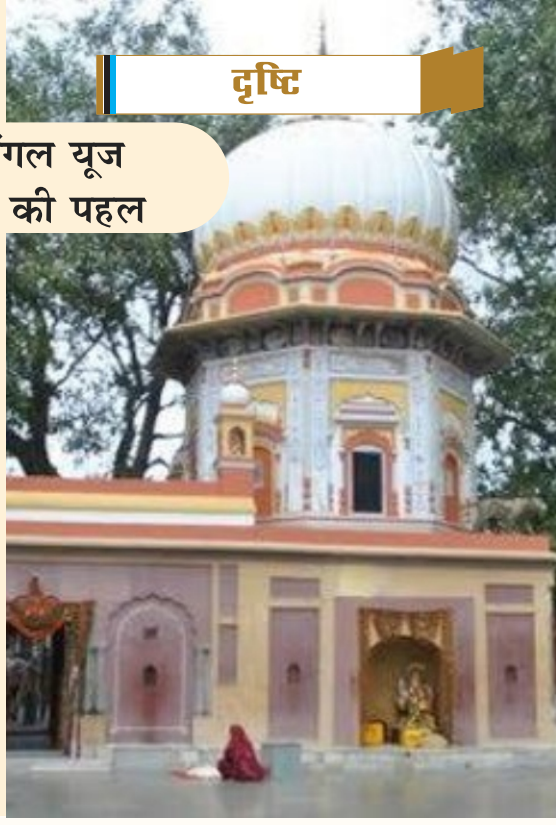

त्रि लोकपुर स्थित मां बालासुंदरी मंदिर में चढ़ावे के रूप में चढ़ने वाली चुनरियां और मन्नत का कपड़ा अब पर्यावरण बचाएगा। चुनरियों से बने थैलों में प्रसाद बंटेगा, जबकि कपड़े से बनाए गए एक लाख थैले लोगों को बांटे जा रहे हैं, ताकि सिंगल यूज प्लास्टिक पर रोक लग सके।

जिला प्रशासन ने प्लास्टिक मुक्त और पर्यावरण संरक्षण को लेकर पहल की है। संगड़ाह ब्लॉक से कपड़े के थैलों का आवंटन शुरू हो गया है, जबकि चुनरी के थैले मंदिर ट्रस्ट को दिए गए हैं। लोगों को प्लास्टिक का उपयोग नहीं करने की सलाह भी दी जा रही है। इसके साथ ग्रामीणों से भी पुराने कपड़े पंचायत कार्यालय में जमा करवाने की अपील की जा रही है, ताकि इन पुराने कपड़ों से और थैले तैयार किए जा सकें। जिले में पॉलीथिन बैग की जगह सामान खरीदने के लिए थैला साथ लेकर बाजार जाने की पुरानी रिवायत शुरू हो गई है। जिला प्रशासन लोगों को जागरूक करने के लिए हर परिवार को एक-एक थैला बांट रहा है। जिले में करीब एक लाख परिवारों को ये थैले आवंटित किए जाएंगे। ◆◆◆

# नशे की बुराई को छोड़ संस्कार अपनाएं युवा: बंडारू दतात्रेय

भा रत युवाओं को देश है 2030 तक भारत में सबसे बड़ी युवाओं की संख्या भारत में होगी। इस शक्ति का सही उपयोग करने के लिए युवाओं को नशे के स्थान पर संस्कार को अपनाना पड़ेगा। यह विचार प्रदेश के राज्यपाल बंडारू दतात्रेय ने गेयटी थियेटर शिमला में एक संगोष्ठी के अवसर पर व्यक्त किये। अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद् द्वारा सुनील उपाध्याय ट्रस्ट के तत्वाधान शिमला में 'भारत की परिकल्पना: नशामुक्त संस्कारयुक्त युवा' विषय पर संगोष्ठी का आयोजन किया गया। इस संगोष्ठी में मुख्य अतिथि प्रदेश के राज्यपाल बंडारू दत्तात्रेय रहे जबकि विशिष्ट अतिथि अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद् के पूर्व राष्ट्रीय महामंत्री महेन्द्र पांडे एवं पूर्व राष्ट्रीय अध्यक्ष नागेश ठाकुर उपस्थित रहे। अपने उद्बोधन में राज्यपाल बंडारू दतात्रेय ने कहा कि विवेकानंद ने युवाओं को संदेश दिया था कि भारत एक श्रेष्ठ राष्ट्र है यहां पर उच्च भारतीय मूल्य विद्यमान रहे हैं। उन्होंने कहा कि विवेकानंद ने कहा था कि उनको अगर 2 हजार युवा भी देश पर बलिदान करने वाले मिल जाये तो वह भारत की परिकल्पना को बदल सकते हैं।

महेंद्र पांडे ने अपने उद्बोधन में विस्तार से सुनील उपाध्याय के समय में हिमाचल प्रदेश विश्वविद्यालय में एबीवीपी के सांगठनिक कार्य की वास्तविक शुरूआत पर विस्तार से चर्चा की। उनका कहना था कि कठुआ में जब उनको हिमाचल प्रदेश में उनको कार्य करने की चुनौती प्रस्तुत की गयी तो उन्होंने उसे प्रदेश में एबीवीपी को खड़ा करके सही रूप से सिद्ध कर दिया। उन्होंने युवाओं में नशे की प्रवृत्ति पर चिंता व्यक्त करते हुए कहा कि 37 प्रतिशत युवा गरीबी रेखा के नीचे होने के बावजूद नशे की चपेट में आ चुके हैं। उनका कहना था कि विश्व का सबसे फलने फूलने वाला उद्योग आज नशे का कारोबार है जोकि गंभीर चिंता की बात है। उन्होंने युवाओं से नशे की दुष्प्रवृत्ति को त्यागने का आह्वान किया। पूर्व राष्ट्रीय अध्यक्ष नागेश ठाकुर ने भी सुनील उपाध्याय के एबीवीपी के लिए किये गये सराहनीय कार्यों का जिक्र किया। कार्यक्रम में सुनील उपाध्याय ट्रस्ट शिमला के अध्यक्ष अशोक शर्मा, हिमाचल प्रदेश विश्वविद्यालय के उपकुलपति सिकंदर कुमार सहित अनेक गणमान्य लोग उपस्थित रहे। ◆◆◆

# जल संग्रहण और उसकी उपयोगिता

-चैतन कौशल नूरपुरी

वर्तमान काल में गांव और शहरों की जन संख्या प्रति सैकेण्ड के हिसाब से तेजी के साथ बढ़ रही है। जनसंख्या और उससे संबंधित इंडस्ट्रियों, कारखानों पर आधारित स्थानीय विकास के लिए जल की मांग बढ़ने के साथ-साथ उसका उपयोग भी अधिक होने लगा है। नलकूपों, हैंड-पंपों और अन्य सुरक्षित पेयजल स्रोतों से अब भूजल का अधिक से अधिक दोहन हो रहा है। इस कारण स्थानीय भूजल स्तर दिन-प्रति दिन नीचे गिर रहा है।

कई स्थान पर नहरें व समयानुकूल वर्षा न होने से एकमात्र नलकूप ही खेतों की सिंचाई करने के संसाधन होते हैं। खेतों की सिंचाई करने हेतु नलकूपों की आवश्यकता पड़ती है। उनसे सिंचाई की जाती है। आवश्यक है भूजल दोहन नियमित और फसल की आवश्यकता अनुसार ही हो। ऐसा न होने पर भूजल का किया गया अधिक दोहन व्यर्थ जाता है। इस कारण वह आज एक बड़ी चिंता का विषय बन गया है। आज गांव और शहरों के मकान, गलियां, सड़क इत्यादि सब बड़ी तेजी से सीमेंटपोश होते जा रहे हैं। स्थानीय संस्थाएं, संगठन, नियास ही नहीं देश का जन साधारण भी कुआं, तालाब, पोखर-जोहड़ों की उपयोगिता भूल गया है। इससे स्थानीय कुओं, तालाबों, पोखर-जोहड़ों की संख्या में काफी कमी आई है। लोगों के सामने हर वर्षा देखते ही देखते वर्ज़ाकालीन का समस्त वर्षाजल गांव और शहरों की नालियों में गिर कर, नाला मार्ग से बाढ़ का भयानक रूप धारण करके उनसे दूर बहुत दूर यों ही व्यर्थ में बह जाता है। इस तरह धरती पर अपार वर्षाजल उपलब्ध होने पर भी बेचारी धरती हर वर्ष प्यासी की प्यासी रह जाती है। इससे भूजल पुनर्भरण की प्राचीन संस्कृति को आघात पहुंचा है। देशभर में वर्षाकालीन भूजल पुनर्भरण व्यवस्था ठीक न होने के कारण गांव और शहरों में भूजल पुनर्भरण प्रणाली संकटग्रस्त है। भूजल, पेयजल संकट गहराता जा रहा है। घर, मकान, सड़क, पुल, इंडस्ट्रियों, कारखानों तथा डैमों की निरंतर वृद्धि और लोगों का पलायन होने से उपजाऊ धरती और जंगलों का असीम क्षेत्रफल निरंतर सिकुड़ता जा रहा है। सिंचाई के जल संसाधनों में चैकडैम, नहरें, कुआं, तालाब, पोखर-जोहड़ जैसे वर्षाजल के कृत्रिम जल भंडार जो प्राचीन काल से ही परंपरागत सिंचाई के माध्यम रहे हैं - उन्हें गांव और शहरों में स्थानीय लोगों द्वारा वर्षाजल चक्रीय प्रणाली के अधीन सक्रिय रखा जाता था। उनसे कृत्रिम भूजल पुनर्भरण भी होता था। जनश्रुति के अनुसार अकेले जिला कांगड़ा के शहर नूरपुर में कभी 365 कुएं और तालाब अलग सक्रिय हुआ करते थे जो अब गिनती के रह गए हैं।

यह समय की विडम्बना ही है कि विकास की अंधी दौड़ के अंतर्गत देश के समस्त गांव और शहरों में जन साधारण द्वारा परंपरागत कृत्रिम जल संसाधनों का तेजी से अंत किया जा रहा है। उनकी उपयोगिता को तिलांजली दी जा रही है। उन्हें समतल करके उनके स्थान पर आलीशान मकान, भवन ही नहीं देवालय तक बनाए जा रहे हैं और कृत्रिम भूजल पुनर्भरण की संस्कृति दिन-प्रति दिन विलुप्त होती जा रही है।

देशभर में एक व्यापक राष्ट्रीय कृत्रिम भूजल पुनर्भरण नीति होनी चाहिए जिसके अंतर्गत स्थानीय जन साधारण से लेकर उनसे संबंधित विभिन्न सरकारी व गैर सरकारी तथा धार्मिक संस्थाओं, संगठनों और नियासों को एक राष्ट्रीय अभियान बना कर कार्य करना चाहिए। इससे देश में हरित, श्वेत और जल क्रांति लाने में सहायता मिलेगी। जल संग्रहण किया जाना उस एटीएम के समान है जिसमें पहले धनराशि डालना अति आवश्यक है। अगर हम एटीएम से बार-बार मात्र पैसे निकालते जाएंगे, उसमें कभी धनराशि डालेंगे नही तो? तो वह एक दिन खाली भी हो जाएगा। उससे हमें कुछ भी नहीं मिलेगा। इसलिए भविष्य में भूजल दोहन करने हेतु हम सबको आज ही से भूजल पुनर्भरण के प्रति अधिक से अधिक सजग रहना चाहिए। हमें कृत्रिम भूजल भंडारों में जल संचयन और उनसे भूजल पुनर्भरण संबंधी निश्चित हर कार्य प्राथमिकता के आधार पर वर्षाकाल आरम्भ होने से पूर्व समयबद्ध पूरा कर लेना चाहिए। ◆◆◆

# हिमाचल में नई शिक्षा नीति

-वरूण शर्मा

भारत आरंभ से ही विश्व भर में सभ्यता एवं संस्कृति का जनक माना जाता रहा है। यहां की गुरुकुल शिक्षा पद्धति को भी विश्व में सर्वश्रेष्ठ दर्जा प्राप्त है। थॉमस मूर जैसा प्रसिद्ध साहित्यकार भी भारत की गुरु शिष्य परंपरा को अपनाकर जीवन में सफल हुआ और टी.एस. एलियट जैसे साहित्यकार ने भी अपने साहित्य में भारतीय दर्शन की विशेषता को केंद्र में रखा। देश की उच्च परंपरा को स्वामी विवेकानंद जैसे सन्यासी के प्रयासों से समग्र विश्व ने जाना और पहचाना। उन्नीसवीं शताब्दी के आरंभ से पूर्व तो देश की शिक्षा प्रणाली उत्तम दर्जे की रही, जिसमें प्रामाणिकता, आचार-विचार वैदिक क्रिया-कलाप के पालन, हवन यज्ञ, गुरु-शिष्य परंपरा और संस्कृति एवं सभ्यता के साथ प्राचीन भारतीय दर्शन को उत्तम स्थान प्राप्त था किंतु ऐसा माना जाता है कि 1835 के लगभग लॉर्ड मैकाले द्वारा जिस शिक्षा प्रणाली को भारत में आधार बनाकर पेश किया गया, उसने धीरे-धीरे देश को पतन के गर्त में झोंकने का कार्य किया।

राष्ट्रीय स्तर पर बनी इस रिपोर्ट में जो दलीलें अथवा प्रस्तावित सिफारिशें रखी गई हैं, उनमें राज्य स्तर पर राज्य आधारित शिक्षा नियामक प्राधिकरण और एक ऐसी ही संस्था राष्ट्रीय स्तर पर बनाने की योजना है। इसके साथ ही राष्ट्रीय शिक्षा आयोग की रचना हेतु प्रस्ताव रखा गया है। इसके साथ ही देश के सभी सरकारी और निजी विद्यालयों में आर्थिक आधार पर पच्चीस प्रतिशत प्रवेश का जो प्रावधान है, उसमें क्या कमियां नजर आ रही हैं, इस हेतु भी मंथन करने और इन्हें दूर करने का प्रयास करने के लिए भी समिति ने सिफारिश की है, जोकि सबको शिक्षा की दृष्टि से एक सही मार्गदर्शन कहा जा सकता है।

हिमाचल प्रदेश में भी इस विषय पर प्रस्ताव आमंत्रित किए गए थे, जिनके आकलन के पश्चात प्रदेश का शिक्षा विभाग अभी और अधिक समय चाहता है। वैसे प्रदेश में त्रिभाषीय आधार पर शिक्षा प्रदान करने का निर्णय लिया गया है, जिसमें हिंदी और अंग्रेजी भाषा के अलावा संस्कृत भाषा को भी विशेष महत्व दिए जाने की बात की गई है। हरियाणा के बाद हिमाचल में संस्कृत को और ज्यादा महत्व देना, प्राचीन संस्कृति की धारा को एक नया आधार प्रदान करने जैसा है, जिसकी आवश्यकता काफी समय से थी। संस्कृत भाषा, जिसे भाषाओं की जननी के रूप में संज्ञा दी जाती है, को अधिक महत्व देने और शिक्षण संस्थानों में वैदिक क्रियाकलापों को पुनः आरंभ करने से, विद्यार्थियों को भरतवंश की प्राचीन संस्कृति एवं लोक संस्कृति की शिक्षा प्रदान करने के प्रयास भविष्य में भारत की समृद्धशाली परंपरा को कायम रखने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाने का कार्य करेंगे।

प्रदेश में नई शिक्षा नीति को आधार बनाकर नौवीं से बारहवीं तक सेमेस्टर प्रणाली को मंजूरी देने का प्रस्ताव पास नहीं हो पाया है, जिसके क्या कारण हो सकते हैं, माननीय शिक्षा मंत्री द्वारा स्पष्ट किए गए हैं। इसमें कोई संदेह नहीं कि वार्षिक परीक्षाओं के साथ ही अर्द्धवार्षिक परीक्षाओं को माध्यम, आधार बनाकर भी अंतिम परिणामों की घोषणा की जा सकती है, किंतु प्रदेश की भौगोलिक संरचना के कारण इसकी संभावना न के बराबर होगी, जोकि एक सही विचार है। वैसे भी राजकीय उच्चतर शिक्षा अभियान, रुसा के तहत जो क्रियाकलाप प्रदेश के महाविद्यालयों में चला आ रहा था, उसमें कोई विशेष सफलता हाथ नहीं लग पा रही थी। इस दृष्टि से वार्षिक परीक्षाओं को ही आधार बनाए रखने का निर्णय कहीं बेहतर है। आर्थिक दृष्टि से भी यह प्रदेश के लिए लाभदायक रहेगा।

यहां एक और विषय पर ध्यान केंद्रित करने की आवश्यकता है, जोकि देश में युवाओं की वर्तमान स्थिति को लेकर है। आज देश का युवा नशाखोरी की ओर अधिक आकर्षित हो रहा है, और यह देश की प्रगति में बाधक सिद्ध हो रहा है। इन सब तथ्यों को ध्यान में रखते हुए प्रदेश के सभी विद्यालयों में अल्पावधि के सैन्य प्रशिक्षण को भी पाठ्यक्रम में स्थान दिया जाना चाहिए। पंजाब में भी यह कदम उठाया गया है, और हम पंजाब की तर्ज पर वेतनमानों की बात करते हैं, तो द्वितीय रक्षा पंक्ति, राष्ट्रीय कैडेट कोर को विद्यालयों और उच्च शिक्षण संस्थानों में जरूरी बना देने चाहिए। इससे शारीरिक गतिविधियों को बल मिलेगा और आने वाली पीढ़ी को स्वस्थ, सुदृढ़ बनाए रखने में यह सब लाभदायक सिद्ध होगा। ◆◆◆

# देशी गाय का घी

## जब तक जीएं घी खाएं

-डॉ. दीपनारायण

भोजन में प्रतिदिन घी खाना चाहिए या नहीं? इस प्रश्न का उत्तर इस बात पर निर्भर करता है कि आप किससे पूछ रहे हैं। लम्बे समय तक कहा गया कि वसा का अधिक सेवन मोटापे, मधुमेह, हृदय रोग, और संभवत: कैंसर का कारण बनता है। हाल ही में परिष्कृत कार्बोहाइड्रेट के प्रतिकूल चयापचयी प्रभावों के प्रमाण मिलने के कारण अधिक वसा वा कम कार्बोहाइड्रेट और केटोजेनिक आहार का सुझाव दिया जाने लगा। कुछ विद्वानों का तर्क है कि आहार में वसा और कार्बोहाइड्रेट की सापेक्ष मात्रा स्वास्थ्य के लिए उतनी प्रासंगिक नहीं है जितनी कि वसा या कार्बोहाइड्रेट इन-स्रोतों से प्राप्त किया जाता है। आज की चर्चा घी खाने-पीने के सन्दर्भ में आधुनिक वैज्ञानिक शोध, पोषण-वैज्ञानिकों की राय, आयुर्वेद की संहिताओं और अपने अनुभव के बीच व्यापक सर्वसम्मति को ध्यान में रखते हुये वर्तमान में उपलब्ध प्रमाणों का सारांश प्रस्तुत करती है। घी खाने या न खाने की सलाह पर विज्ञान बड़ा गडमड दृश्य प्रस्तुत करता हाल में हुई शोध समीक्षाओं और मेटा-विश्लेषणों का निष्कर्ष अब स्पष्ट करता है कि भोजन में वसा व घी की मात्रा कम करने की बजाय यदि कार्बोहाइड्रेट की मात्रा का कम किया जाये तो मोटापा व वनज-जो तमाम रोगों की जड़ है, का घटाने में मदद मिलती है। दूसरी ओर इंसुलिन संवेदनशीलता वाले व्यक्तियों के लिए कम वसा या कम कार्बोहाइड्रेट वाला भोजन एक जैसा प्रभाव डालता है।

लेकिन इंसुलिन प्रतिरोध, ग्लूकोज असहिष्णुता, या इंसुलिन हाइपरसेक्रीशन वाले लागों में कम कार्बोहाइड्रेट व उच्च वसा वाला भोजन तुलनात्मक रूप से मोटापा अधिक घटा सकता है। कीटोजेनिक भोजन में वसा या घी की अधिक मात्रा, वसा की तुलना में कम प्रोटीन, और अंतत: अत्यल्प सिंड्रोम में अधिक एडिपोसिटी, परिसंचरण में ट्राइग्लिसराइड्स की उच्च सांद्रता, एच.डी. एल. कोलेस्ट्रॉल का निम्न स्तर, उच्च रक्तचाप, ग्लूकोज-असहिष्णुता, फैटी-लीवर और शरीर के अंगों में दर्द जैसी समस्याएं शामिल हैं। यही इंसुलिन प्रतिरोध के जोखिम बढ़ जाता है। भोजन में वसा या घी आदि कम करने के बजाय यदि कार्बोहाइड्रेट की मात्रा कम की जाये तो इन संकेतकों में अधिक प्रभावी ढ़ंग से सुधार लाया जा सकता है।

आयुर्वेद के अनुसार गाय का घी नित्य सेवनीय रसायन है। घी के प्रयोग से दीर्घायु, व्याधिक्षमत्व में वृद्धि, अग्नि या पाचन क्रिया की साम्यता, ओजस में वृद्धि, शरीर के सभी उतकों या धातुओं का पोषण, याददाश्त में बेहतरी, संयोजी उतकों में चिकनाई बढ़ने से शरीर में लोच या लचीलापन, वात और पित का प्रशमन होता है। सूत्र तो बहुत हैं पर उन सबका निचोड़ इस सूत्र में समाहित है कि दूध और घी का नित्य सेवन श्रेष्ठतम रसायन है (च।सू।25।38)- गव्यं सर्पि: सर्पिषाम। महर्षि-वैज्ञानिक अग्निवेश के दिग्गज सहपाठी महर्षि-वैज्ञानिक अग्निवेश के दिग्गज सहपाठी महर्षि भेल आत्रेय के छ: शिष्यों में से एक थे। उनका कहना है कि दूध घी का नित्य सेवन आयु, बल और वर्ण बढ़ाने वाला होता है (भेलसंहिता, सू।7,13-14, अंश) पिबेत्क्षीरं घृतं नित्यमायुष्यकरणं हितम।। बलवर्णकरं ह्येतदारोग्यकरणं तथा। प्राचीन भारत के महर्षि-वैज्ञानिक आचार्य सुश्रुत का अध्ययन स्पष्ट करता है कि घी मधुर, सौम्य, मृदु, शीतवीर्य, अल्प-क्लेदकारक, शरीर में स्नेहन करने वाला, एवं उदावर्त, उन्माद, वनस्पति से प्राप्त तेल और डालडा, जिनमें 80 प्रतिशत तक ट्रांस फैटी एसिड होता है, का लगातार बढ़ता अनियंत्रित उपयोग भी दिल की समस्याओं का जनक है। घी खाने के संबंध में यहां पर पर्याप्त व्याख्या की गई है। लेकिन हमें यह नहीं भूलना चाहिए कि खाने का अधिकार उन्हें ही है जो व्यायाम करते हों। अन्यथा, अनेक बीमारियां खड़ी होती हैं।

अपस्मार, शूल, ज्वर, आनाह तथा वात व पित्त को शांत करने वाला, पाचक-अग्नि-दीपक है। स्मृति, मति, मेधा, क्रांति, स्वर, लावण्य, सुकुमारिता, तेज और बल सब को बढ़ाता है। घी आयुवर्धक, वृष्य, वय:स्थापक, पचने में भारी, नेत्रों के लिये हितकर कफ को बढ़ाने वाला, पाप तथा दरिद्रता का नाशक, विषनाशक तथा सूक्ष्म जीवाणुओं का नाशक है। ◆◆◆

# प्रकृति एवं गाय के संरक्षण से होगा जीवनोद्धार

प्रकृति निश्चय से जीवनदात्री है। वास्तव में प्रकृति ही प्रेरक तत्व है जो मानव मन में सहजता, सरलता, सहिष्णुता, रचनात्मकता, समभाव, सौन्दर्य, परोपकार आदि उत्कृष्ट गुणों का संचार करती है। यह हमें अपने विविध रूपों से उपकृत करती है। अत एव हमारा यह कर्तव्य बन जाता है कि हम उसके संरक्षण में सदा तत्पर रहें और उसे अपने अनुकूल बनाएं किन्तु सबसे बड़ी विडम्बना यह है कि स्वार्थपरता, भौतिकता एवं विलासिता के दौर में आज मानव प्रकृति की महता को विस्मृत कर उसे विनष्ट करने पर तुला हुआ है। जो धरा समस्त चराचर को धारण किए हुए है उसे हमने निजि स्वार्थवश तात्कालिक लाभ हेतु अपनी आवश्यकता के अनुरूप शहरीकरण, विस्तृत राजमार्ग, खनिज प्राप्ति एवं खनन आदि प्रक्रियाओं से विदीर्ण कर दिया है।

साथ ही बढ़ती जनसंख्या को देखते हुए हरित क्रान्ति के नाम पर रसायनिक उर्वरकों एवं जहरीले कीटनाशकों का अतिशय प्रयोग कर उसे विषामत कर दिया है। प्रारम्भ की वह खेती जो पूर्णतया जैविक थी एवं पशु-धन पर आधारित थी, अधिक उपज के लालच में उसको विदेशी बीजों रसायनिक खादों एवं विषैले कीटनाशकों के हवाले कर दिया गया है। इनकी सहज प्राप्ति, सरकारी अनुदान और बढ़ती उपज ने कृषकों तथा कृषि योग्य भूमि को इतना अभ्यस्त बना डाला है कि पुन: जैविक खेती की ओर लौटना असम्भव प्रतीत हो रहा है। वनों एवं चरागाहों की कमी से तथा बैलों के बदले टैक्टर आदि से खेत जोते जाने से पशु-धन घटता जा रहा है जिस कारण कृषक पूर्णतया जैविक खेती की ओर कदम बढ़ाने में कतरा रहे हैं। रासायनिक खादों और जहरीले कीटनाशकों से जमीन उर्वरा शक्ति क्षीण होती जा रही है। सिंचाई हेतु

अत्यधिक मात्रा में जल की मांग बढ़ रही है जबकि जमीन के नीचे जलस्तर निरन्तर घटता जा रहा है। गोबर की खाद से जमीन में नमी बनी रहती थी और फसलों की सिंचाई के लिए कम मात्रा में जल की आवश्यकता पड़ती थी। जिसके 10 ग्राम गोबर में तीन सौ करोड़ जीवाणु उत्पन्न होते हैं एसी देशी गाय किसानों की गौशालाओं से गायब हैं। हां कहीं-कहीं विदेशी जरसी एवं दोनस्ली गायों ने उन गोशालाओं में अपने लिए अवश्य जगह बना डाली है। जिनके दुग्ध निर्मित पदार्थों आज पशु विशेषज्ञ एवं वैज्ञानिक स्वास्थ्य वर्धक नहीं मानते।

पृथ्वी और गाय को वैदिक काल से ही माता की संज्ञा दी गई है। संस्कृत का गो शब्द पृथिवी और गाय दोनों का पर्यायवाचक है। अन्न, जल, वायु, वनस्पति, पुष्पपल्लव, फलादि प्रदान करने वाली पृथिवी माता कामधेनु है जो हमें आश्रय देकर हमारी हर मनोकामना पूर्ण करती है। भारतीय देशी-पहाड़ी गाय तो है ही कामधेनु जिसका ए-2 दूध एवं उससे निर्मित पदार्थ अमृत तुल्य एवं स्वास्थ्य वर्धक हैं। उसका गोबर सर्वश्रेष्ठ उर्वरक है। रेडिएशन कम करने की उसमें क्षमता है, साथ ही रक्तचाप, अस्थि रोग आदि को शामिल करने में प्रभावी है। गोमूत्र से बना अर्क वात-पित्त-कफ रोगों का नाशक है, आज उसी पंचगव्य से रोगों का शमन किया जा रहा है। अत:एव हमारा परम कर्तव्य बन जाता है कि हम प्रकृति और गाय का बड़ी निष्ठा एवं तत्परता से संरक्षण करें। ◆◆◆

# प्राकृतिक खेती व उसके घटक जीरो बजट की खेती व उसके घटक

जीरो बजट की खेती प्रणाली से चाहे कोई भी खाद्यान्न, सब्जी या बागवानी की फसल हो, उसका लागत मूल्य जीने होगा। मुख्य फसल का लागत मूल्य अन्तर्वर्ती मिश्र फसलों के उत्पादन से निकाल लेना और मुख्य फसल बोनस के रूप में लेना ही 'जीरो बजट खेती' कहलाता है। फसलों को बढ़ाने के लिए और उपज लेने के लिए जिन-जिन संसाधनों की आवश्यकता होती है वे सभी घर में ही उपलब्ध करना। किसी भी हालात में मंडी या बाजार से खरीदकर नहीं लाना। जीरो बजट खेती को हानि पहुंचाने वाला कोई भी संसाधन घर में या गांव में निर्मित नहीं करना। यही जीरो बजट खेती है। जीरो बजट खेती का नारा है, गांव का पैसा गांव में और शहर का पैसा गांव में। इस तरह हमारे देश का पैसा विदेश को नहीं बल्कि विदेश का पैसा देश में लाना, यही जीरो बजट खेती है। ◆◆◆

*With Best Compliments from:*

**SHIVALIK HOSPITAL**

Near Police Lines, Jhalera, Una (H.P.)
Mob.: 98059-33644

**Dr. Akshay Sharma**
MBBS (MAMC Delhi) (Gold Medalist)
MS (MAMC Delhi) Regd. MCI-7841
General & Laproscopic Surgeon
Ex. Senior Registrar LNJP &
GB Pant Hospital New Delhi

**Dr. Anupma Sharma**
MBBS, MD (PGI Chandigarh)
**SKIN SPECIALIST**
Regd. PMC-28190

**Facilities Available:** General & Specialist OPD, Indoor Admission Facilities, Fully equipped Operation Theatre, All Major & Minor Operations, Laproscopic Gall bladder Removal, Nebulization therapy for Asthma, ECG/X-Ray, Blood Tests.

# सुरेश कश्यप

## सांसद शिमला, हिमाचल प्रदेश

समस्त प्रदेशवासियों को

# हिमाचल पूर्ण राजत्व व गणतंत्र दिवस

की

# हार्दिक शुभकामनाएं।

## माँ से शिकायत

*ऐ माँ मुझे तुझसे भी शिकायत है*
*मुझे तो तूने मेरी हदें बता दीं*
*मगर भाई को उसकी हद में रहना, सिखाना भूल गई।*
*हम दोनों की परवरिश साथ में ही हुई*
*फिर क्यों उसके काम उसको बताना भूल गई।*
*माँ हम दोनों तेरे ही बच्चे हैं, फिर क्यों हम दोनो के*
*घर आने में फर्क आ गया।*
*वो देर रात बाहर रहता है, और मुझे सात बजे के पहले*
*घर में वापिस आना सिखा दिया।*
*माँ मुझे तुझसे भी शिकायत है,*
*तूने मुझे सिखा दिया कि अपने परिवार की इज्जत*
*पर दाग मत लगवाना।*
*मगर तू भाई को ये बताना भूल गई, कि किसी की*
*इज्जत से खिलवाड़ मत करना।*
*माँ मुझे तुझसे शिकायत है,*
*मेरी छोटी-छोटी गल्तियों पर तूने मुझे थप्पड मारे हैं,*
*तो फिर क्यों भाई की बडी-बडी करतूतों पर परदे डाले हैं।*
*माँ जितना तूने मुझे सिखाया उतना भाई को भी सिखाया होता*
*तो न ही किसी भाई को फांसी होती और न किसी*
*लड़की का परिवार खून के आंसू रोया होता।*

***मन्जू शर्मा, हिमाचल प्रदेश***

## एक अकेला पार्थ खडा है

भारत वर्ष बचाने को।
सभी विपक्षी साथ खड़े हैं
केवल उसे हराने को।।
भ्रष्ट दुशासन सूर्पनखा ने
माया जाल बिछाया है।
भ्रष्टाचारी जितने कुनबे
सबने हाथ मिलाया है।।
समर भयंकर होने वाला
आज दिखाई देता है।
राष्ट्र धर्म का क्रंदन चारों
ओर सुनाई देता है।।
फेंक रहें हैं सारे पांसे
जनता को भरमाने को।
सभी विपक्षी साथ खड़े हैं
केवल उसे हराने को।।
चीन और नापाक चाहते
भारत में अंधकार बढ़े।
हो कमजोर वहां की सत्ता
अपना फिर अधिकार बढे।।
आतंकवादी संगठनों का
दुर्योधन को साथ मिंला।
भारत के जितने बैरी हैं
सबका उसको हाथ मिला।।
सारे जयचंद ताक में बैठे
केवल उसे मिटाने को।
सभी विपक्षी साथ खड़े हैं
केवल उसे हराने को।
भोर का सूरज निकल चुका है
अंधकार घबराया है।।
कान्हा ने अपनी लीला में
सबको आज फंसाया है।
कौरव की सेना हारेगी
जनता साथ निभायेगी।
अर्जुन की सेना बनकर के
नइया पार लगायेगी।
ये महाभारत फिर होगा
हाहाकार मचाने को।
सभी विपक्षी साथ खड़े हैं
केवल उसे हराने को।।

**साभार: व्हाटसएप ग्रुप**

## मेरी बहन

परियों के देश से आई
मेरी बहन।
चांद सितारों को साथ लाई
मेरी बहन।
घर में ढेरों खुशियां लाई
मेरी बहन।
हंसती है मुस्काती है
तो फूलों के जैसे खिल जाती है
मेरी बहन।
जब रोती है तो
लाल गुलाब जैसी हो जाती है
मेरी बहन।
रोज लड़ती,रोज झगड़ती
पर रूठ जाए तो
मुझको मना भी लेती है
मेरी बहन।
कभी मुझे हंसाती है
कभी रुलाती है,कभी सताती है
मेरी बहन।
जैसी भी है मेरी जैसी है
बहुत प्यारी है
मेरी बहन।

**राजीव डोगरा,**
**कांगड़ा हिमाचल प्रदेश**

# सरस्वती की पूजा का दिन है बसंत पंचमी

–जयंती राजकर्ण

संसार के प्रत्येक देश में त्यौहारों की अपनी-अपनी परंपरा है भारत तो त्योहारों का धनी है। यहां प्रत्येक मास और पक्ष में कोई ना कोई त्यौहार अवश्य आ जाता है। यदि माघ में बसंत पंचमी है तो फागुन में होली चैत्र में रामनवमी है तो वैशाख में वैशाखी। ज्येष्ठ में गंगा दशहरा है तो सावन में रक्षाबंधन का उत्सव मनाया जाता है। इन सभी त्योहारों में बसंत पंचमी का विशेष महत्व है। इसे श्री पंचमी भी कहते हैं। यह पूजा पूर्वी भारत –पश्चिमोत्तर–बांग्लादेश–नेपाल और कई राष्ट्रों में बड़े उल्लास के साथ मनाया जाता है। यह त्यौहार माघ मास के शुक्ल पक्ष की पंचमी तिथि को मनाया जाता है।

इस समय शरद ऋतु की समाप्ति तथा बसंत ऋतु का आगमन होने से मौसम बड़ा सुहावना हो जाता है। पेड़ों में नए –नए पत्तों फूल तथा खेतों में पीली सरसों बड़ी ही मन भावनी लगती है इस समय ना तो अधिक सर्दी होती है और ना अधिक गर्मी। शीतल मंद सुगंध पवन चलने लगती है। सारे पशु–पक्षी लता–वृक्ष स्त्री–पुरुष आनंद मग्न से दिखाई पड़ते हैं। ऐसे सुहाने मौसम में बसंत पंचमी का पर्व आता है । बसंत ऋतु को ऋतुराज कहते हैं तथा गीता में श्री कृष्ण ने कहा है कि ऋतुओं में मैं बसंत हूं।

बसंत पंचमी के दिन ज्ञान तथा विद्या की देवी मां सरस्वती की पूजा की जाती है। प्रत्येक शिक्षण संस्थानों में विद्यार्थियों द्वारा पूरी तमन्ना के साथ सरस्वती पूजा का आयोजन किया जाता है। छात्र गढ़ पूजा के कुछ दिनों पूर्व से ही साज सज्जा के कार्यों में संलग्न हो जाते हैं। पूजा के दिन छात्र–छात्राएं प्रातः कालीन तैयार होकर पूजा पंडालों अथवा पूजन स्थल पर एकत्रित हो जाते हैं। मां सरस्वती की प्रतिमा स्थापित की जाती है। बच्चे अपनी पुस्तकें भी पूजा के सम्मुख रखते हैं। तत्पश्चात विधिवत पूजन कार्य संपन्न कराया जाता है। लोग पुष्पांजलि देते हैं मौसमी फल–फूल धूप दीप खीर चंदन वस्त्र तिल आदि वस्तुएं मां के चरणों में समर्पित करते हैं। इसके बाद विभिन्न सांस्कृतिक कार्यक्रमों के द्वारा ज्ञान दायिनी मां सरस्वती की आराधना की जाती है यहां एक प्रार्थना प्रस्तुत है। सांस्कृतिक कार्यक्रम के बाद प्रसाद वितरण किया जाता है

अनेक पर्व के साथ बसंत पंचमी पर्व का भी विशेष महत्व है। इस पर्व पर केवल बच्चे ही नहीं अपितु संगीत व साहित्य के महान साधक भी बड़े हर्षोल्लास के साथ आनंद दायिनी मां की पूजा में शामिल होते हैं। संगीत के साधक राग बसंत तथा बहार गाते हैं तथा अपनी संगीत व साहित्य की साधना को मां के चरणों में समर्पित करते हैं। इस पर्व पर अनेक सुंदर पूजा स्थल सजाए जाते हैं जो देखने में बड़े ही मनोहर लगते हैं। इसके अतिरिक्त इस त्यौहार के आने पर हमारे जीवन में एक नवीन उत्साह आ जाता है। यद्यपि कि यह पावन पर्व है लेकिन कुछ शरारती तत्वों द्वारा पूजा के लिए आयोजन कार्यों द्वारा चंदा लेने का प्रयास किया जाता है। यह लोग चंदा वसूली के नाम पर दुकानदारों वाहन चालकों तथा आम जनता से वसूली करते हैं। ऐसे लोगों का बुनियादी शिक्षा से कोई सरोकार नहीं होता लेकिन गलत कर्मो को पूरा करने के लिए पूजा का सहारा लेते हैं। हमें ऐसे लोगों का विरोध करना चाहिए तथा पूजा की पावनता को अपवित्र होने से बचाना चाहिए। ◆◆◆

## सूचना

*इस वर्ष मातृवन्दना संस्थान द्वारा, मातृवन्दना पत्रिका में स्तरीय लेख लिखने वाले लेखकों को पुरस्कृत करने की योजना बनी है। सम्बन्धित लेखकों को पत्र द्वारा सूचित किया जाएगा।*

*मातृवन्दना पत्रिका में मई 2019 से मार्च 2020 के बीच छपे 'संपादक के नाम पत्र' की प्रति अपने पूर्ण पते के साथ मातृवन्दना संस्थान कार्यालय, डॉ0 हेडगेवार भवन, नाभा, शिमला-4 को 31 मार्च 2020 तक भेजें।*

# बहशी दरिन्दों को तुरन्त मिले सजा

–मुकेश विग

सात वर्ष पूर्व 16 दिसंबर 2012 को दिल्ली में चलती बस में जिन दरिन्दों ने उस निर्दोष छात्र के साथ दुष्कर्म किया था वे आज भी जेल में बन्द हैं। सुप्रीम कोर्ट द्वारा इन सभी को फांसी की सजा सुना तो दी गई लेकिन उस पर अमल न हो पाया क्योंकि कानूनी प्रक्रिया बहुत लम्बी है जटिल है। जनता ने अपना रोष जताया। इंसाफ मांगा पर कानूनी कछुआ चाल जारी रही शायद इसी कारण हैदराबाद में पशुचिकित्सक के साथ जो दरिन्दगी हुई। उसे मारकर जला दिया गया इससे जनता फिर सड़कों पर आ गई तथा तुरन्त इंसाफ की मांग की व जब चारों बहशी दरिन्दे पुलिस से मुठभेड़ में मारे गये तो लोगों ने जमकर जश्न मनाया क्योंकि वे जानते थे कि यदि इन पर भी मुकद्मा चलता तो कई साल लग जाते फैसला आने में पुलिस पर फूल बरसाये गये। मिठाई बांटी गई।

यदि इन दरिन्दों को फांसी होती तो कानून का भी सम्मान बना रहता लेकिन ऐसे मामलों में देर आए दुरूस्तआयद नहीं चलता। जिस बेटी के साथ ऐसा महापाप होता है उसका परिवार व जनता शीघ्र इंसाफ चाहते हैं जिसका वर्षों तक इंतजार करना मुश्किल व असहनीय हो जाता है। यूपी के उन्नाव में पीड़िता को जिंदा जला दिया गया पांचों आरोपी जेल में हैं लोग इस मामले में भी हैदराबाद की तरह इंसाफ चाहते हैं क्योंकि लम्बे–लम्बे मुकद्मों से वे उब चुके हैं। ऐसे दरिन्दों को तुरन्त फांसी पर लटकाना चाहिए लेकिन ऐसा होता नहीं है। कब तक बेटियां तड़प–तड़प कर जान देती रहेंगी व ये दरिन्दे वर्षों तक जेल की मुफ्त की रोटियां तोड़ते रहेंगे। हैदराबाद पुलिस की तरह जनता का धैर्य भी टूट सकता है। 14 अगस्त 2004 को पश्चिम बंगाल की अलीपोर सैंट्रल जेल में धनंजय चटर्जी को फांसी दी गई थी इसके बाद 15 वर्षों में कोई फांसी नहीं हुई जबकि सैकड़ों मामले लंबित पड़े हैं। अन्य देशों में जुर्म कम होते हैं क्योंकि वहां की सख्त सजा के स्मरण से ही अपराधी डरते हैं जबकि हमारे देश में दुष्कर्म, हत्या, चोरी, नशे के मामले लगातार बढ़ते ही जा रहे हैं क्योंकि कानूनी शिकंजा कमजोर व सुस्त होने के कारण अपराधी डरते ही नहीं। कई तो पकड़े ही नहीं जाते। अफजल व कसाब जैसे खूंखार आतंकी भी वर्षों तक मजे से बिरयानी खाते रहे। राष्ट्रपति कोविंद ने भी ऐसे दरिन्दों की दया याचिका का अधिकार खत्म करने की बात कही है। कम उम्र की बच्चियों से भी दुष्कर्म के मामले रोज हो रहे हैं ऐसे दरिन्दों की सजा फांसी का फंदा ही है जेल की रोटियां, बिरयानी, मौज मस्ती नहीं इसके लिए त्वरित निर्णय से ही ऐसे दोषियों के बढ़ते हौसलों पर अकुंश लग सकता है। परिवार, समाज व देश के लिए ये दरिन्दे कलंक से कम नहीं।

नशा व मोबाइल भी ऐसे अपराधों की जड़ हैं इनमें फंसकर युवा गल्त मार्ग पर चलते हैं एक बार इनका चस्का लग गया तो सब कुछ बर्बाद होते देर नहीं लगती। जुर्म को उम्र की तराजू में नहीं तौला जाना चाहिए। निर्भया कांड में भी जिस युवक को नाबालिग माना गया था सबसे आक्रमक रूख उसी ने अपनाया था इसलिए कानून की बुटियों व सुस्ती को तुरन्त दूर करना बहुत जरूरी है। बिहार की बक्सर जेल में दस फन्दे तैयार हो रहे हैं, कुछ युवा जल्लाद बनने को भी तैयार हैं ये जनता का आक्रोश है जो इन हैवानों के गले में फन्दा देखना चाहती है। बेटी बचाओ दरिन्दों से नारा साकार हुआ तो जनता व बेटियों के परिवार फिर से खुशी व जश्न मनायेंगे। ये दुआ भी करेंगे कि नये साल व भविष्य में दिल्ली, हैदराबाद, उन्नाव जैसे कांड न हों। हर बेटी खुश व सुरक्षित रहे उन पर जुल्म अत्याचारों का क्रम पूरी तरह थम जाए। ◆◆◆


Dr. Hem Raj Sharma
Specialist in Kshar Sutra Therapy
(Piles, Fistula, Anal Polyps, Prolapse Rectum, Pilonidal Sinus)
Formerly Incharge Medical Officer,
DAH Una, Govt. of Himachal Pradesh
NATIONAL CHIKITSAK GURU
RAV (National Academy of Ayurved) New Delhi
Under Ministry of Health & Family Welfare, Deptt. of Ayush, Govt. of India.
B.Sc. HPU Shimla, GAMS, MD, University Rohtak, PGD Health & Family welfare, Punjab Uni. Chandigarh CC. Yog & Naturalpathy, Gujrat University, Jamnagar, CRAV Kshar-Sutra Specialisation, New Delhi
"सर्वे भवन्तु सुखिनः, सर्वे सन्तु निरामयाः"
JAGAT HOSPITAL
&
Kshar Sutra Centre
Near Govt. College, Nangal Road, Una (H.P.)
Pin : 174303
94184-88660, 88940-68358, 94593-88323

# इस्लामोफोबिया की वैश्विक चुनौती

-अजय बोकिल

भारत में आशंकाओं की बुनियाद पर नागरिकता संशोधन कानून का चौतरफा विरोध कर रहे मुसलमान खुद दुनियाभर में किन समस्याओं का सामना कर रहे हैं, इसे मलेशिया के प्रधानमंत्री महातिर मोहम्मद के देश की राजधानी कुआलालम्पुर में इस्लामिक समिट में दिए उद्घाटन भाषण से समझा जा सकता है। महातिर ने कहा कि जिहाद, दमनकारी प्रशासन और नव- उदारवाद आज इस्लामिक देशों के सबसे बड़े दुश्मन हैं। दुनिया भर के मुसलमानों की तकलीफों पर दुख व्यक्तकरते हुए उन्होंने कहा कि मुस्लिम केवल इस्लामोफोबिया और हिंसा से ही नहीं अपने देशों में कुशासन से भी जूझ रहे हैं। महातिर ने कहा कि आज हमने दुनिया में अपना सम्मान खो दिया है। हम न तो मानव ज्ञान के स्रोत हैं और ना ही किसी मानव सभ्यता के मॉडल। उन्होंने कहा कि 18 वीं से लेकर 20 वीं सदी तक मुस्लिम देशों पर यूरोपीय ताकतों का प्रभुत्व रहा, लेकिन उनसे आजादी हासिल करने के बाद भी हमने स्वतंत्र देशों के तौर पर भी बहुत कुछ नहीं किया है। हममे से कुछ तो औपनिवेशिक युग के स्तर की गुलामी तक पहुंच गए हैं। मलेशियाई पीएम ने कहा कि हम भले ही जिहाद का दावा करें लेकिन इसका नतीजा मुस्लिमों के खिलाफ अत्याचार में बढ़ोतरी के रूप में सामने आता है। हम अपने ही देशों से बाहर निकाले जाते हैं, शरणदाता देशों से खारिज होते हैं और वहां हमें दमन और आलोचना का शिकार होना पड़ता है। हमने इस्लाम को लेकर इस हद तक डर पैदा कर दिया है कि दुनिया में इस्लामोफोबिया की जगह बन गई है।

महातिर मोहम्मद वही पीएम हैं, जिन्होंने भारत में कश्मीर से धारा 370 हटाने की खुलकर आलोचना की थी, जिससे भारत-मलेशिया सम्बन्धों में तनाव आ गया था। 93 वर्षीय महातिर शायद विश्व के सबसे वृद्ध और फिट राजनेता हैं। यहां 'इस्लामोफोबिया' से तात्पर्य दुनिया में इस्लाम के प्रति उपजे उस सामाजिक पूर्वाग्रह और नफरत की भावना से है, जो मुख्य रूप से राजनीतिक इस्लाम, धार्मिक कट्टरवाद और गैर मुसलमानों की निर्मम की हत्याओं के कारण उपजी है। वैश्विक स्तर पर मुसलमानों में यह आम धारणा है कि उनका दमन किया जा रहा है, उनके धर्म और पहचान को खत्म करने की साजिश रची जा रही है। यह भावना न केवल गैर मुस्लिम राष्ट्रों में है, बल्कि उन देशों में भी है, जो इस्लामिक राष्ट्र हैं। कारण भले अलग-अलग हों, लेकिन यह हकीकत है कि आज दुनिया के अधिकांश मुस्लिम देश भारी अशांति और आंतरिक कलह से गुजर रहे हैं। उन देशों में भी, जहां वे बहुसंख्यक हैं और उन देशों मे भी जहां वो अल्पसंख्यक हैं। आज दुनिया में लगभग 52 देश मुस्लिम राष्ट्र हैं अर्थात यहां मुसलमान बहुसंख्यक हैं। इनमें केवल 6-7 ही लोकतांत्रिक गणराज्य हैं। विरोधाभास यह है कि जहां मुसलमान बहुसंख्यक हैं, वहां वे पूर्ण इस्लामिक राष्ट्र और सबके लिए शरिया कानून चाहते हैं और जहां अल्पसंख्यक हैं, वहां वो सेक्युलर लोकतंत्र और सभी के लिए समान कानून चाहते हैं। यह स्थिति तब है, जब मुसलमान इस्लाम को लोकतंत्र का पोषक धर्म मानते हैं।

बहरहाल महातिर ने जो कहा, उसे इस्लामिक देश कितनी गंभीरता से लेंगे, लेंगे भी या नहीं, कहना मुश्किल है, लेकिन उन्होंने जो कहा वह उस कड़वी सचाई का आईना है, जिससे आज मुस्लिम देश और दुनियाभर के मुसलमान गुजर रहे हैं, महसूस कर रहे हैं। इसी का परिणाम अशांति और अंतहीन क्लेश और कलह है। यह सच है कि इस्लाम में समय के अनुरूप सुधार के पैरोकार भी हैं। इसे इज्तिहाद कहा जाता है। कट्टर वहाबी इस्लाम को मानने वाले सऊदी अरब में भी हाल में हुए कुछ सामाजिक सुधारों से दुनिया में सही संदेश गया है। इटली के इस्लामिक विद्वान ओलिवर रॉय के मुताबिक मुसलमानों में अब टैक्नोक्रेटिक आधुनिकतावाद और पारंपरिक मूल्यों के बीच तालमेल बिठाने वाला वर्ग भी उभर रहा है। हालांकि यह वर्ग अभी इतना सक्षम नहीं है कि राजनीतिक इस्लाम की अवधारणा को बदल दे। उनके मुताबिक आज जरूरत पारंपरिक इस्लामी मूल्यों को वैश्विक मूल्यों में बदलने की है। साथ ही लोकतांत्रिक मूल्यों को हर स्तर पर अपनाने की आवश्यकता है।

आज ज्यादातर मुस्लिम राष्ट्र जिन समस्याओं से दो-चार हो रहे हैं, वो है जिहाद, अशांति, गृह युद्ध, लैंगिक असमानता, आर्थिक विषमता और गरीबी। लेकिन जिहादी केवल इस्लामिक राज्य के लिए लड़ रहे हैं। उनका इस्लाम केवल राजनीतिक इस्लाम है, जबकि मुसलमानों की बेहतरी तथा मुस्लिमों और गैर मुस्लिमों के बीच परस्पर विश्वास कायमी के लिए कई स्तरों पर काम की जरूरत है। कुआलालम्पुर समिट से इन समस्याओं का कोई ठोस उपाय सामने आएगा या नहीं, यह देखने की बात है। महातिर ने जो कहा उस पर इस्लामिक राष्ट्रों को गहरे आत्ममंथन की जरूरत है। और इस्लाम ही क्यों, इस बदलते दौर में सभी धर्मों और आध्यात्मिक प्रवृत्तियों को भी वक्त के हिसाब से खुद को बदलने की दरकार है। ◆◆◆

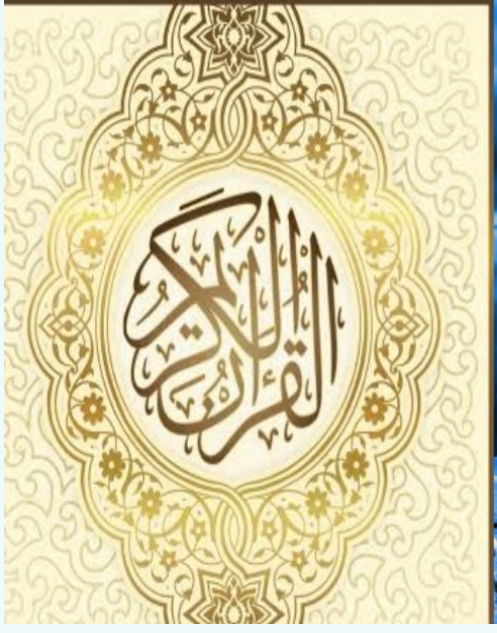

# संत रविदास और इस्लाम

-डॉ. विवेक कुमार

आज जय भीम, जय मीम का नारा लगाने वाले कुछ राजनेता कठपुतली के समान प्रयोग कर रहे हैं। यह मानसिक गुलामी का लक्षण है। दलित-मुस्लिम गठजोड़ के रूप में बहकाना भी इसी कड़ी का भाग हैं। दलित समाज में संत रविदास का नाम प्रमुख समाज सुधारकों के रूप में स्मरण किया जाता हैं। आप रविदासिया कुल से सम्बंधित माने जाते थे।

चर्ममारी राजवंश का उल्लेख महाभारत जैसे प्राचीन भारतीय वांग्मय में मिलता है। प्रसिद्ध विद्वान डॉ.विजय सोनकर शास्त्री ने इस विषय पर गहन शोध कर चर्ममारी राजवंश के इतिहास पर पुस्तक लिखा है। इसी तरह चमार शब्द से मिलते-जुलते शब्द चंवर वंश के क्षत्रियों के बारे में कर्नल टॉड ने अपनी पुस्तक 'राजस्थान का इतिहास' में लिखा है। चंवर राजवंश का शासन पश्चिमी भारत पर रहा है। इसकी शाखाएं मेवाड़ के प्रतापी सम्राट महाराज बाप्पा रावल के वंश से मिलती हैं। संत रविदास जी महाराज लम्बे समय तक चित्तौड़ के दुर्ग में महाराणा सांगा के गुरू के रूप में रहे हैं। संत रविदास जी महाराज के महान, प्रभावी व्यक्तित्व के कारण बड़ी संख्या में लोग इनके शिष्य बने। आज भी इस क्षेत्र में बड़ी संख्या में रविदासी पाए जाते हैं।

उस काल का मुस्लिम सुल्तान सिकंदर लोधी अन्य किसी भी सामान्य मुस्लिम शासक की तरह भारत के हिन्दुओं को मुसलमान बनाने की उधेड़बुन में लगा रहता था। इन सभी आक्रमणकारियों की दृष्टि गाजी उपाधि पर रहती थी। सुल्तान सिकंदर लोधी ने संत रविदास जी महाराज मुसलमान बनाने की जुगत में अपने मुल्लाओं को लगाया। जनश्रुति है कि वो मुल्ला संत रविदास जी महाराज से प्रभावित हो कर स्वयं उनके शिष्य बन गए और एक तो रामदास नाम रख कर हिन्दू हो गया। सिकंदर लोधी अपने षडयंत्र की यह दुर्गति होने पर चिढ़ गया और उसने संत रविदास जी को बंदी बना लिया और उनके अनुयायियों को हिन्दुओं में सदैव से निषिद्ध खाल उतारने, चमड़ा कमाने, जूते बनाने के काम में लगाया। इसी दुष्ट ने चंवर वंश के क्षत्रियों को अपमानित करने के लिये नाम बिगाड़ कर चमार सम्बोधित किया। चमार शब्द का पहला प्रयोग यहीं से शुरू हुआ। संत रविदास जी महाराज की ये पंक्तियाँ सिकंदर लोधी के अत्याचार का वर्णन करती हैं।

*''वेद धर्म सबसे बड़ा, अनुपम सच्चा ज्ञान*
*फिर मैं क्यों छोड़ूँ इसे पढ़ लूँ झूट कुरान*
*वेद धर्म छोड़ूँ नहीं कोसिस करो हजार*
*तिल-तिल काटो चाही गोदो अंग कटार''*

चंवर वंश के क्षत्रिय संत रविदास जी के बंदी बनाने का समाचार मिलने पर दिल्ली पर चढ़ दौड़े और दिल्ली की नाकाबंदी कर ली। विवश हो कर सुल्तान सिकंदर लोधी को संत रविदास जी को छोड़ना पड़ा। इस झपट का जिक्र इतिहास की पुस्तकों में नहीं है मगर संत रविदास जी के ग्रन्थ रविदास रामायण की यह पंक्तियाँ सत्य उद्घाटित करती हैं बादशाह ने वचन उचार

*''मत प्यारा इसलाम हमारा ।।*
*खंडन करै उसे रविदासा ।*
*उसे करौ प्राण कौ नाशा ।।*
*जब तक राम नाम रट लावे । दाना पानी यह नहीं पावे ।।*
*जब इसलाम धर्म स्वीकारे । मुख से कलमा आप उचारै ।।*
*पढे नमाज जभी चितलाई । दाना पानी तब यह पाई ।।''*

जैसे उस काल में इस्लामिक शासक हिंदुओं को मुसलमान बनाने के लिए हर संभव प्रयास करते रहते थे वैसे ही आज भी कर रहे हैं। उस काल में दलितों के प्रेरणास्रोत्र संत रविदास सरीखे महान चिंतक थे। जिन्हें अपने प्राण न्यौछावर करना स्वीकार था मगर वेदों को त्याग कर कुरान पढ़ना स्वीकार नहीं था। मगर इसे ठीक विपरीत आज के दलित राजनेता अपने तुच्छ लाभ के लिए अपने पूर्वजों की संस्कृति और तपस्या की अनदेखी कर रहे हैं। दलित समाज के कुछ राजनेता जिनका काम ही समाज के छोटे-छोटे खंड बाँट कर अपनी दुकान चलाना है अपने हित के लिए हिन्दू समाज के टुकड़े-टुकड़े करने का प्रयास कर रहे हैं। आईए डॉ. अम्बेडकर की सुने जिन्होंने अनेक प्रलोभन के बाद भी इस्लाम और ईसाइयत को स्वीकार करना स्वीकार नहीं किया। हर व्यक्ति इस लेख को शेयर अवश्य करे जिससे हिन्दू समाज को तोड़ने वालों का षड़यंत्र विफल हो जाए। ◆◆◆

## इंदौरा के कर्मठ समाजसेवी रामेश्वर सिंह कटोच का अवसान

भारतीय किसान संघ हिमाचल प्रदेश के पूर्व में प्रदेश अध्यक्ष और राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ हिमाचल सम्भाग के माननीय संघचालक रहे रामेश्वर सिंह जी कटोच का पिछले दिनों 97 वर्ष की आयु में अपने निवास स्थान इंदौरा में स्वर्गवास हो गया। वे अभी तक स्वस्थ थे, और प्रतिदिन सायंकाल बस अड्डे के पास बने पीपल के टियाले तक जाते थे। वहां बैठकर अपने पुराने साथियों के साथ बातचीत करते थे।

स्व. रामेश्वर जी ने आजादी के आंदोलन में युवावस्था में सक्रिय भूमिका निभाई। विभाजन का दंश झेल रहे विस्थापित परिवारों की पूरी चिंता की। पठानकोट और आस-पास के क्षेत्रों में विस्थापितों के आवास की व्यवस्था व सेवा सुश्रूषा में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। वे किसान संघ के कार्य को हिमाचल प्रदेश के सुदूर अंचल में ले गए। खण्ड स्तर पर समितियों का गठन हो और कृषक अपनी ज़मीन पर जैविक खेती को प्रमुखता दें उनका यह प्रयास रहता था। स्थानीय विभिन्न धार्मिक व सामाजिक गतिविधियों में भाग लेते थे। देहावसान के पूर्व तक वह आर्य समाज के दैनिक कार्यकलापों में अपना सहयोग देते रहे। उनके निधन से इंदौरा क्षेत्र के एक प्रेरणादाई व्यक्तित्व के स्थान की रिक्ता हो गई है जिसको भर पाना कठिन कार्य है। ईश्वर से प्रार्थना है कि स्व. रामेश्वर चौधरी जी दिवंगत आत्मा को शांति प्रदान करे। ◆◆◆

## सेवाभावी कांशी राम जी को विनम्र श्रद्धांजलि

गत 09 दिसंबर को जोगेन्द्रनगर बरोट के प्रसिद्ध समाजसेवी कांशी राम जी का हृदयाघात से असामयिक निधन हो गया। कांशीराम जी पूर्ण रूप से स्वस्थ थे और प्रतिदिन अपनी दिनचर्या का व्यवस्थित रूप से पालन करते थे। आप कृषक होने के साथ-साथ एक ठेकेदार भी थे। कांशीराम जी स्थानीय सामाजिक व राजनीतिक गतिविधियों में भी सहभाग देते थे। मृत्यु पूर्व वे पारिवारिक दायित्व को भी बखूबी निभा रहे थे। पधर के पास तेज दौड़ने के फलस्वरूप आपको हृदयाघात लगा जिसके कारण मौके पर ही आपने अपनी देह का त्याग कर गौलोक को गमन कर गए। स्व. कांशीराम जी अपने पीछे भरा-पूरा परिवार छोड़ गए। आपके सुपुत्र धनीराम जी मातृवन्दना के प्रकाशन के प्रारम्भिक काल में प्रबन्धक का महतवपूर्ण दायित्व निभाया। वर्तमान में धनीराम जी वनवासी कल्याण आश्रम में दिल्ली में प्रांत संगठन मंत्री का दायित्व निभा रहे हैं। प्रभु से प्रार्थना है कि स्व. कांशीराम जी को अपने चरणों में स्थान दे तथा शोक संतप्त परिवार को दु:ख सहने की शक्ति प्रदान करे। ◆◆◆

## नहीं रहे परिश्रमी किसान विनोद ठाकुर

अपने अखिल भारतीय सह प्रचार प्रमुख नरेन्द्र ठाकुर जी के बड़े भाई विनोद ठाकुर जी का गत दिनों पेड़ कटने की जद में आने से असामयिक निधन हो गया है। वे 55 की आयु के थे। उनका अंतिम संस्कार जोगिन्द्रनगर दारट बग्ला खड्ड में किया गया। वे मृत्यु पर्यन्त गृह कार्यो में सक्रिय थे। साथ ही घरेलू व कृषि कार्यों में तन्मयता के साथ व्यस्त रहते थे। वह पूर्णत: स्वस्थ थे। किन्तु विधि के विधान के अनुसार कम आयु में ही काल के ग्रास बन गए व मृत्यु को प्राप्त हो गए। भगवान उनकी दिवंगत आत्मा को अपने चरणों में स्थान दे। ◆◆◆

मातृवन्दना के सभी पाठकों को गणतंत्र दिवस की हार्दिक शुभकामनाएं

# RAJ KUMAR & BROS.

**Prop. Raj Kumar (Urf Gungru)**

DEALS IN:

**FOODGRAIN & KARYANA MERCHANT, TATA SALT, MDH MASALA, SHAKTI BHOG, GAGAN BANASPATI, NATURE FRESH, MARVEL TEA, GHARI DETERGENT**

Dhanotu, Mahadev, Teh. Sunder nagar, Distt. Mandi (H.P.)

Contact No.: 01907-263789, 94182-31435

मातृवन्दना के सभी पाठकों को गणतंत्र दिवस की हार्दिक शुभकामनाएं

**Lakshman Kumar**
**Prop.**

# Hotel
# BALA JI REGENCY

Near Vicko Resort, Mandi, H.P.

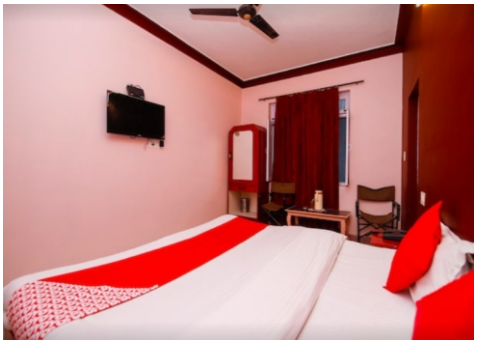

## सैन्य अफसर देने में हिमाचल देश के टॉप टेन राज्यों में शामिल

-रोहित पराशर

चाहे बात देश में सर्वप्रथम सेना के सबसे बड़े सम्मान परमवीर चक्र पाने की हो या किसी भी युद्ध में अपने साहस और बलिदान का लोहा मनवाने की,इसमें छोटा सा पहाड़ी राज्य हिमाचल को हमेशा अग्रिम पंक्ति में रहा है। देश में पहला परमवीर चक्र हिमाचल के सपूत मेजर सोमनाथ शर्मा ने पाया था अभी तक हिमाचल के वीर सपूत कुल चार सर्वोच्च सम्मान पा चुके हैं। इतना ही नहीं सेना में अफसर देने में हिमाचल प्रदेश पिछले कई दशकों से टॉप टेन में जगह बनाए हुए है। हिमाचल की आबादी देश की आबादी का मात्र 01.57 फीसदी लेकिन इसके बावजूद हर साल देश की तीनों सेनाओं में हिमाचल के 100 से अधिक सैन्य अफसर बनकर देश की सरहदों की रक्षा करने जा रहे हैं। हाल ही में आईएमए की पासिंग आउट परेड में हिमाचल के 18 कैडेट सैन्य अफसर बनकर निकले हैं। जबकि जून माह में हिमाचल की वीरभूमि ने देश को 21 वीर अफसर दिये हैं। यदि पिछले दस सालों के आंकड़ों पर नजर डाली जाए तो इन सालों में हिमाचल जैसे छोटे से पहाड़ी राज्य अकेली भारतीय थल सेना के लिए आईएमए से कैडेट सैन्य अफसर के तौर पर 400 से अधिक अफसर दे दिये हैं। वहीं ओटीए, एनडीए और टैक एंट्री के माध्यम से भी हर साल हिमाचल के दर्जनों युवा देश की सेनाओं में जा रहे हैं। ◆◆◆

## दंगाई नाबालिग दोषी कौन

-सुरेन्द्र कुमार

देश में पनपे हिंसक माहौल के दौरान गत माह करोड़ों रुपये की संपत्ति खाक हो गई। नागरिकता संशोधन कानून यानि सीएए के विरोध से देश के अंदर भडकी आग से उत्तर प्रदेश में ही 17 लोगों की जानें गई हैं। इसमें वाराणसी का वह मासूम भी शामिल है जो अभी मात्र आठ वर्ष का ही था। उसे शायद ही समझ थी कि भारत में इन दिनों नफरत का यह जानलेवा हुजूम क्यों भडका है। देश में घटित दुखद प्रदर्शनकारी घटनाओं के दौरान देशवासियों ने कुछ ऐसी दयनीय तस्वीरें भी देखीं जिसमें नाबालिग बच्चों का दंगाइयों ने निडरता से इस्तेमाल किया। दिल्ली, रामपुर और कानपुर में घटित प्रदर्शनकारी घटनाओं में उपद्रवियों ने जिन मासूमों को अपना मोहरा बनाया उनकी उम्र 14 वर्ष से 18 वर्ष के मध्य बताई गई। प्रदर्शनकारी नाबालिगों के मासूम चेहरों को आमजन ने समाचार पत्रों में बखूबी देखा है। विकृत मानसिकता से ग्रस्त प्रदर्शनकारी शायद यह भूल रहे हैं कि बच्चे देश का भविष्य होते हैं। इनके जीवन को उज्जवल बनाने के लिए बेहतर शिक्षा और संस्कार की जरूरत होती है। परंतु देश में विद्यमान राष्ट्र विरोधी विचारधारा आए दिन इन्हें अपना मोहरा बनाने का मौका नहीं गंवाती। नाबालिगों को शायद ही मालूम हो कि नागरिकता संशोधन कानून क्या है? इसके नफे नुकसान क्या है? देश में इसका विरोध क्यों हो रहा है? बावजूद इसके ये देश विरोधी गतिविधियों में बढ़ चढ़ कर भाग लेते हैं। बड़ा सवाल यह है कि प्रदर्शनकारी नाबालिगों के दिमाग में नफरत का जहर कौन घोल रहा है? क्या इन्हें भारत का संविधान भी कोई खिलौना लगता है? इनके परिवारजन इन्हें देश विरोधी गतिविधियों में शामिल होने से क्यों नहीं रोकते? ये कुछ प्रश्न हैं जो देशवासियों को बारंबार झकझोरते रहते हैं। पुलिस भले ही सीसीटीवी फुटेज खंगाल कर उपद्रवियों को पहचान कर, सोशल मीडिया में अपलोड विवादित पोस्ट की शिनाख्त करके दोषियों को नोटिस थमाने का काम कर रही हो तथा प्रदर्शनकारियों की संपत्ति से देश में हुए नुकसान की भरपाई करने की बात कर रही हो। लेकिन दंगाइयों को देश प्रेम का माकूल पाठ पढ़ाने के लिए यह पर्याप्त नहीं है। अत: वक्त आ गया है कि हिंदुस्तान के सौहार्दी सौदागरों को देश भक्ति का एक ऐसा पाठ पढ़ाया जाए, जिसकी सीख उन्हें इस काबिल बना सकें कि वे राष्ट्र संपत्ति को नुकसान पहुंचाने से पहले, मासूमों को प्रदर्शनों में धकेलने से पहले, सरेआम आगजनी करने के पहले, देशवासियों पर पथराव करने से पहले और हर मुद्दे को धार्मिक व राजनीतिक रंग में रंगने से पहले उसकी राष्ट्रीय प्रासंगिकता को परख सकें। ◆◆◆

# 100 मील मैराथन अचीवर हैं दिव्या वशिष्ठ

कई धावक-धाविकाएं सिर्फ एक बार ही लंबी मैराथन दौड़ने का सपना देखते हैं, लेकिन कुछ बार-बार इस चुनौती की अपनाते हैं। ऐसी ही अनोखी मैराथन धाविका हिमाचल के धर्मशाला की दिव्या वशिष्ठ हैं। दिव्या ने हाल ही में 161 कि.मी. (100 मील) वाली अति दुर्गम 'गढ़वाल-नडुरंस रेस' की इकलौती महिला विजेता बनी हैं। इस मैराथन में पांच प्रतिभागियों के बीच केवल दिव्या अकेली महिला प्रतिभागी थीं, जिसने 31 घंटे व आठ मिनट के अंतराल में नौ डिग्री तक के तापमान में दो पुरूष धावकों के बाद द्वितीय रनर अप बनकर देवभूमि को गौरवान्वित किया।

100 मील मैराथन अचीवर दिव्या ने सेंट ल्यूक स्कूल सोलन से पढ़ाई की है। उन्होंने सोलन, बंगलूर, कनाडा व अमरीका आदि में उच्च पदवियों पर कार्य करते हुए अपने जुनून की खातिर गृहनगर धर्मशाला में बसने का मन बना लिया है। पिछले साल उनके पास दो लक्ष्य थे, पहला एवरेस्ट मैराथन व दूसरा 100 मील की दौड़। पहला लक्ष्य पूरा करने के बाद इस बार उन्होंने मैराथन पर ध्यान केंद्रित किया था। दिव्या के अनुसार कुछ साल पहले उन्होंने दस किलोमीटर की दौड़ लगाई थी। इसके बाद उन्होंने कभी पीछे मुड़कर नहीं देखा। 2016 तक उन्होंने 14 घंटे में 100 किलोमीटर की अधिकतम दूरी, बंगलूर अल्ट्रा और खारदुंग ला चैलेंज में 72 किलोमीटर और दुनिया की सबसे उंची अल्ट्रा मैराथन में लगभग 17582 फुट की उंचाई पर दौड़ लगाई थी। 2017 में द. अफ्रीका में 11 घंटे और 42 मिनट में कॉमरेड्स अप रन में भाग लिया, जो डरबन से पीटरमैरिट्सबर्ग तक 87 किलोमीटर की दूरी पर है। यह विश्व का सबसे बड़ा अल्ट्रा मैराथन भी है। 'गढ़वाल नडुरंस रेस' के बारे में उन्होंने बताया कि यह दौड़ ऋषिकेश से लगभग 100 किमी दूर पौड़ी में है। इसके अधीन 25, 50, 100 और 161 किमी जैसी विभिन्न दूरी की श्रेणियां हैं। दौड़ को दिन के दौरान 12.5 कि.मी. और रात में 3.25 कि।मी के कई लूप में विभाजित किया गया है। रात में तापमान 18 डिग्री सेल्सियम से लेकर नौ डिग्री तक था। ◆◆◆

# हिमाचल की 4 महिला क्रिकेटर भारत-ए टीम में

हिमाचल प्रदेश की चार महिला क्रिकेटरों का चयन इंडिया-ए-टीम के लिए हुआ है। इन महिला खिलाड़ियों में हरलीन देओल कांगड़ा, रेणुका सिंह मंडी, सुषमा वर्मा और तनुजा कंवर शिमला से शामिल हैं। ये महिला क्रिकेटर आस्ट्रेलिया के खिलाफ तीन एकदिवसीय और तीन टी-20 मैचों में खेलेंगी। वनडे मैच 12, 14 और 16 दिसंबर को ब्रिसबेन में खेले जाएंगे, जबकि तीन टी-20 मुकाबले 19, 21 और 23 दिसंबर को गोल्ड कोस्ट में खेले जाएंगे। ऑल इंडिया महिला चयन समिति की ओर से चयनित इन खिलाड़ियों में सुषमा वर्मा और हरलीन देओल पहले भी भारतीय टीम में खेल चुकी हैं, जबकि रेणुका सिंह और तनुजा कंवर पहली बार टीम का हिस्सा बनेंगी।

हिमाचल प्रदेश क्रिकेट एसोसिएशन के अध्यक्ष एवं बीसीसीआई के कोषाध्यक्ष अरूण धूमल ने कहा कि प्रदेश से एक साथ चार महिला क्रिकेटरों का चयन होना एसोसिएशन और प्रदेश को गौरवान्वित करने वाला क्षण है। ◆◆◆

Dainik jagran @JagranA
शाहनवाज हुसैन बोले- नागरिक
देश के मुसलमानों के खिलाफ न
#CitizenshipAmendmentBi
#CitizenshipBill
#CitizenshipAmendmentBill #
#ShahnawazHussain

शाहनवाज हुसैन बोले- नागरिकता संशोधन विधेयक देश के मुसलमानों के खिलाफ नहीं
jagran.com

1 9 23

ऑपइंडिया @OpIndia_in · 2h
सिंधिया के नए ट्विटर बॉयो में उनके #Congress से जुड़े होने का कोई संकेत नहीं है। इससे पहले, उनके प्रोफाइल में गुना से 2002-2019 तक सांसद रहने का जिक्र था। साथ ही उन महकमों का भी जिक्र था जिसकी जिम्मेदारी मनमोहन सरकार में सँभाली थी।

कॉन्ग्रेस छोड़ रहे हैं ज्योतिरादित्य सिंधिया! ट्विटर पर बॉयो बदल कयासों को दी हवा - Hindi...
hindi.opindia.com

306

ऑपइंडिया @OpIndia_in · 8h
यह पहला मौका नहीं है जब कोई सीजेआई तिरुपति के इस मंदिर गया हो। अपने रिटायर्मेंट से पहले रंजन गोगोई भी तिरुपति मंदिर के दर्शन करने पहुँचे थे।

जनेऊ पहने तिरुपति दर्शन करने पहुँचे CJI बोबड़े: कहा- 40 साल से आ रहा हूँ, आज अपने...
hindi.opindia.com

पिंकू शुक्ला @shuklapinku · 5h
CG में आज एक जिहादी मानसिकता का कॉन्स्टेबल रहमान खान ने अपने पाँच ITBP साथियों को गोली मार कर हत्या कर दिया और तीन लोग घायल हो गए मुल्ले को गोली मार दी गयी है

मोदी जी ये विश्वास जितना बड़ा महंगा पड़ रहा है स ही साथ सुरक्षाबलों में घुसपैठ राष्ट्रीय सुरक्षा के लि बड़ा खतरा है।

34 759 1,531

ऑपइंडिया @OpIndia_in · 6h
"मैं दुबई में 6000 दिरम पर नौकरी करता हूँ, तुम्हारी क्वॉलिफ़िकेशन के लिहाज़ से 10000 दिरम यानी भारतीय करंसी के अनुसार क़रीब 2 लाख रुपया महीना मिल जाएगा। यहाँ आ जाओ।"
#Pakistani नदीम इक़बाल ने ऐसे अपने जाल में फँसाया था मेरठ की हिंदू लड़की को।
#crimenews

पाकिस्तानी नदीम खान के जाल में फँस दुबई भागी हिन्दू लड़की की हुई 'घर वापसी' - Hindi New...
hindi.opindia.com

News18 India @News18India · 3h
पाकिस्तान के कराची के इस मंदिर के बारे में कहा जाता है कि यहां मांगी गई मुराद हर हाल में पूरी होती है.

पूरी दुनिया में मशहूर हैं पाकिस्तान के ये हनुमान मंदिर 1500 साल पुराना
hindi.news18.com

Shiv Aroor @ShivAroor · 9

Ramdas Athawale @Ramdas... · 1d
महाराष्ट्र मे
भाजपा ने कॉंग्रेस को लटका दिया है,
शिवसेना को झटका दिया है, और राष्ट्रवादी कॉंग्रेस को अटका दिया है।

391 12.5K

AIR News Shimla @airnews_shi... · 3m
विधानसभा सत्र के दौरान विधायकों को खाने पर मिलने वाले अनुदान को खत्म करने का राज्य सरकार ने लिया निर्णय। 09/ 12/ 2019@ 1945 Hrs
youtu.be/csCCYZ lwg via @YouTube

Jai Prakash Sha

Rohit G Del SM

Jammu Kashmir celebrates Constitution Day for the first time...
www.jammukashmirnow.com

Jammu Kashmir celebrates Constitution Day for the first time,

-राजा चौरसिया

एक बार एक आदमी रास्ते से कहीं जा रहा था। रास्ते में उसे एक वयस्क हाथी दिखा, जो बहुत ही विशालकाय था, लेकिन इतना ताकतवर होने के बावजूद वह एक कमजोर रस्सी से बंधा हुआ था। वह आदमी अचानक वहाँ रुक गया। उसे यह देख कर बहुत ही आश्चर्य हुआ कि कैसे इतना बड़ा हाथी एक कमजोर रस्सी के सहारे बंधा रह सकता है।

जब कि हाथी में इतनी शक्ति होती है, कि वो बड़े से बड़े पेड़ों, पहाड़ों को हिला सकता है, वह चाहे तो जंजीरों को तोड़ सकता है और आजाद हो सकता है, लेकिन वो इन रस्सियों से बंधा हुआ है। जब कि वहां कोई जंजीर, पिंजड़ा नही है। ऐसा क्या कारण है जिसके कारण एक विशालकाय इस कमजोर रस्सी से बंधन मुक्त नहीं हो पा रहा है। इस कारण को जानने के उद्देश्य से वह महावत (हाथी का प्रशिक्षक, जो हाथी को हांकता है) के पास गया और उत्सुकता पूर्वक उसने अपनी जिज्ञासा रखी। उसके महावत से पूछा 'श्रीमान, यह विशालकाय हाथी जो एक सेकेंड में तहस नहस कर सकता है, ऐसा क्या कारण है, जिसकी वजह से यह एक कमजोर सी रस्सी से बंधा हुआ है? और भागने की कोशिश भी नही करता?' कृपया उत्तर दें। उस आदमी की बात सुनकर महावत ने उत्तर दिया, जब यह हाथी बहुत छोटा था, तब मैं इसे इसी रस्सी के सहारे बाँधा करता था, उस समय यह रस्सी इतनी मजबूत थी, कि इसको तोड़ पाना इसके लिए बहुत ही मुश्किल था, उस समय इसने उस रस्सी को तोड़ने का भरसक प्रयास किया, कई बार चोटिल भी हुआ, पैरों से खून भी निकला, लेकिन इसके लिए रस्सी तोड़ पाना मुमकिन नहीं हुआ। काफी प्रयास करने के बाद असफल होकर इसने हार मान ली और असंभव मान कर रस्सी पर जोर लगाना भी छोड़ दिया। धीरे-धीरे जब यह बड़ा हुआ। इसे अभी भी लगता था, की यह रस्सी इससे नही टूटेगी। अत: यह इसे तोड़ने में असमर्थ है। इसने रस्सी को तोड़ने का प्रयास नहीं किया। आज यह एक वयस्क बलवान, विशालकाय हाथी है। लेकिन इसने रस्सी से हार मान ली। हालांकि यह किसी भी समय रस्सी को तोड़कर अपने आपको बंधन से मुक्त कर सकता है। लेकिन बचपन की हार को जीवन की हार मानकर यह अब कोशिश ही नही करता। फलस्वरूप यह केवल एक कमजोर रस्सी से ही बंधा रहता है। यह बात जानकर वह व्यक्ति बहुत ही आश्चर्य चकित हुआ। दोस्तों इस हाथी के समान ही, हम मे से जाने कितने लोग ऐंसे हैं, जो यह मान लेते हैं, कि वो जीवन में कभी सफल नही हो सकते नहीं। क्योंकि पहले उन्होंने कोशिश की थी। लेकिन असफल रहे। दोस्तों हो सकता है, कि सफलता का प्रयास पूरे मन से नहीं किया गया हो। ◆◆◆

## सफलता के लिए लगातार सीखें

एक बार एक राजा ने एक बढई को राज-काज के लिए नियुक्त किया। राजा उसके कार्य से काफी खुश था, क्योंकि उसने पहले ही महीने लगभग 18 पेड़ों को काटा था। अगले महीने उस बढई ने काफी कोशिश की, लेकिन वो केवल 15 पेड़ों को ही काट पाया। तीसरे महीने अपनी पूरी सामर्थ्य लगा कर भी, वह केवल 12 पेड़ों को ही काट पाया। धीरे-धीरे उसकी पेड़ काटने की क्षमता कम होने लगी। एक दिन राजा उसके पास पंहुचा और उसके उत्पादकता में कमी का कारण पूछा, बढई ने जवाब दिया- 'महाराज मेरी उम्र भी बढ़ रही है, और शरीर की शक्ति भी कम हो रही है, इसी कारण मेरी उत्पादकता में कमी हो रही है।' यह जानकर राजा ने पूछा 'कितने समय पहले तुमने अपनी कुल्हाड़ी को धार लगाई थी। आश्चर्य चकित हो कर बढ़ई ने जवाब दिया केवल एक ही बार। तब राजा ने

समझाया यही कारण है, कि तुम्हारी पेड़ काटने की उत्पादकता में दिन प्रतिदिन कमी आ रही है। पहले अपनी कुल्हाड़ी में धार लगाओ, फिर तुम्हारी उत्पादकता में बढ़ोत्तरी होगी। ◆◆◆

## प्रश्नोत्तरी

1.हिमाचल प्रदेश को केंद्र शासित प्रदेश कब बनाया गया?
2. हिमाचल प्रदेश के पुराने सचिवालय भवन का नाम है?
3. किस वर्ष हिमाचल प्रदेश को भाग-सी राज्य घोषित किया गया?
4. 1952 में नवगठित हिमाचल प्रदेश की पहली विधानसभा का अध्यक्ष कोन था?
5. हिमाचल प्रदेश में पहला पंचायती राज अधिनियम कब पारित किया गया?
6. चीफ कमिश्नर शासित प्रान्तों का भविष्य निर्धारित करने के लिए 1949 में स्थापित समिति के अध्यक्ष कोन थे?
7. 1952 में हिमाचल प्रदेश विधान सभा के प्रथम सचिव कोन थे?
8. शिमला नगर निगम की स्थापना किस वर्ष हुई?
9. पुनर्गठन से पूर्व पंजाब का उच्च न्यायालय किस भवन में रहा है?
10.हिमाचल प्रदेश से प्रथम राज्य सभा सदस्य निम्न मे से कोन बने थे?
11.प्रशासनिक सुविधा के लिए हिमाचल प्रदेश को शिमला एवं कांगड़ा मंडल नामक दो भागो में कब बांटा गया?
12. हिमाचल प्रदेश के वर्तमान विधान सभा भवन का निर्माण किस वर्ष हुआ था?
13. 1967 से 1971 के बीच हिमाचल प्रदेश किस राज्य के उच्च न्यायालय के अधीनस्थ था?
14. प्रदेश में जमींदारी प्रथा का अंत कब हुआ था?
15. भारत के 18वें राज्य के रूप में हिमाचल प्रदेश कब अस्तित्व में आया?

*उत्तर- 1. 1956 में, 2. इर्लसली भवन, 3.1952 में, 4. जसवंत राम, 5. 1968 में, 6. पट्टाभि सितारमैया, 7. एन.सी.नंदी, 8.1852, 9.पीटर हॉफ भवन, 10. चिरंजीलाल वर्मा, 11. 1979, 12. 1925 में, 13. दिल्ली, 14. 1954-55, 15. 1 मार्च 1952।*

## पहेली

1. जब बजाई बांसुरी, निकसो कारो नाग।।
2. पीली पोखर, पीले अण्डे, बेटा बता नहीं तो मारूं डण्डे।
3. पैर नहीं तो नग बन जाए, सिर न हो तो 'गर'।
   यदि कमर कट जाए मेरी, हो जाता हूं 'नर।'
4. अंत नहीं तो फौज समझिए, आदि नहीं तो बन गया नानी।
   देश प्रेम के लिए न्यौछावर, उनकी बड़ी महान कहानी।।
5. प्रथम नहीं तो गज बन जाऊं, मध्य नहीं तो काज।
   लिखने-पढ़ने वालों से कुछ, छिपा ना मेरा राज।
6. तीन अक्षर का मेरा नाम, उलटा-सीधा एक समान।
   आता हूँ खाने के काम, बूझो तो भाई मेरा नाम?

*उत्तर: हुक्का, कढ़ी, नगर, सेनानी, कागज, डालडा*

## चुटकुले

पप्पू बादाम बेच रहा था
चिंटू ने पूछा ये खाने से क्या होता है ?
पप्पू- दिमाग तेज होता है ।।
चिंटू- कैसे ?
पप्पू- अच्छा ये बताओ 1 किलो चावल में कितने दाने होते हैं
चिंटू।

डॉक्टर ने मरीज को रोजाना 10 किलोमीटर चलने को कहा।
साल भर बाद मरीज ने डॉक्टर को फोन किया।
अफगानिस्तान पहुंच गया हूं, यहीं रुक जाऊं या रूस की तरफ निकल जाऊं।।।

जिनकी शक्ल मिलती है,
वो 'भाई बहन' होते हैं
जिनकी अक्ल मिलती है,
वो 'सच्चे दोस्त' होते हैं
जिनकी न अक्ल मिलती है न शक्ल मिलती है।
ऐसे तो मूर्ख होते हैं।

# Activities of Distt. Red Cross Society, Kullu

- Financial assistance upto Rs. 50,000/- to poor & needy patients whose annual income is less than Rs.35,000/-.
- Financial assistance to sufferers of natural calamities.
- Ambulance Services to the patients on nominal charges at Regional Hospital, Kullu.
- Voluntary blood donation camps.
- EHSAS.(Encouraging Health and Secure Ageing for Senior Citizens ) Programme_ Free health checkup medicines & diagnostic test facilities camp approach.
- Day care Centres for Senior Citizens at Kullu, Manali, Bhuntar,Banjar, Ani and Nirmand.
- District Disability Rehabilitation Centre(DDRC) at Kullu providing following services:-
  - Identification, prevention of disabilities, early detection of persons with disabilities & facilitation of disability certificate,
  - Early intervention, Assessment/ providing assistive devices like wheel chair, hearing aids, crutches, calipers etc.
  - Therapeutic Services e.g. Physiotherapy, Occupational Therapy, Speech Therapy, IQ assessment etc.
  - Referral and arrangement of surgical correction through Govt. & Charitable institute.
  - Counseling of persons with disabilities, their parents & family members.
  - Promotion of barrier free environment.
- Red Cross Melas

*Join Red Cross and Serve Humanity.*

(Dr. Richa Verma)
Deputy Commissioner- cum -Chairperson,
District Red Cross Society, Kullu.

# अपना आज नशे में न उड़ाएँ,
# अपना कल सुरक्षित बनाएँ।

# - ठान लें -

## जीवन को कहें हाँ
## नशे को कहें ना

हिमाचल प्रदेश में 15 नवम्बर से 15 दिसम्बर 2019 तक नशा निवारण के लिए विशेष अभियान चलाया जा रहा है।

हम और आप मिलकर बदल सकते हैं तस्वीर
और ला सकते हैं सबके जीवन में
खुशहाली और सुख – समृद्धि।

**आईए प्रण लें, न नशा करेंगे
और न ही करने देंगे।**

**जयराम ठाकुर**
मुख्यमंत्री, हिमाचल प्रदेश

सूचना एवं जन सम्पर्क विभाग, हिमाचल प्रदेश द्वारा जारी

Designed by : New Era Graphics, Shimla Ph. : 2628276

मातृवन्दना

प्रकाशक एवं मुद्रक कमल सिंह सेन द्वारा मातृवन्दना संस्थान के लिए सवितार प्रैस, प्लॉट 820, फेस - 2, उद्योग क्षेत्र चंडीगढ़ से मुद्रित तथा डॉ. हेडगेवार भवन, नाभा, शिमला - 171004, से प्रकाशित।

follow us on: YouTube

Posting Date:
1st & 5th of the Month